LATEST EDITON

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

राजस्थान 3rd ग्रेड

(REET मुख्य परीक्षा हेतु)

2 LEVEL

HANDWRITTEN NOTES

भाग-1

राजस्थान का भूगोल + इतिहास + संस्कृति + भाषा

INFUSION NOTES

WHEN ONLY THE BEST WILL DO

राजस्थान 3rd ग्रेड

REET LEVEL - 2

मुख्य परीक्षा हेतु

भाग – 1

राजस्थान का भूगोल + इतिहास + संस्कृति + भाषा

प्रस्तावना

*प्रिय पाठकों, प्रस्तुत नोट्स "**राजस्थान 3rd ग्रेड (REET मुख्य परीक्षा लेवल – 2 हेतु)** को एक विभिन्न अपने अपने विषयों में निपुण अध्यापकों एवं सहकर्मियों की टीम के द्वारा तैयार किया गया है / ये नोट्स पाठकों को **राजस्थान कर्मचारी चयन बोर्ड, जयपुर (RSMSSB)** द्वारा आयोजित करायी जाने वाली परीक्षा **"राजस्थान 3rd ग्रेड (REET मुख्य परीक्षा लेवल – 2)" की** परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगें **/***

अंततः सतर्क प्रयासों के बावजूद नोट्स में कुछ कमियों तथा त्रुटियों के रहने की संभावना हो सकती है / अतः आप सूचि पाठकों का सुझाव सादर आमंत्रित हैं/

प्रकाशकः

INFUSION NOTES

जयपुर, 302017 (RAJASTHAN)

मो : 01414045784, 8233195718

ईमेल : contact@infusionnotes.com

वेबसाइट : http://www.infusionnotes.com

Online Order at ➡ https://bit.ly/3rd-grade-mains-notes

Whatsapp Link - https://wa.link/hx3rcz

Contact us at - 8233195718 + 8504091672

मूल्य : ₹

संस्करण : नवीनतम (2022)

राजस्थान का भूगोल

1. स्थिति एवं विस्तार	1
2. राजस्थान का भौगोलिक स्वरूप	13
3. मानसून तंत्र एवं जलवायु	24
4. (अपवाह तंत्र) - नदियाँ, झीलें एवं बाँध	27
5. एनीकट, जल संरक्षण विधियाँ एवं तकनीकियाँ	50
6. राजस्थान की वन संपदा	54
7. वन्य जीव-जंतु वन्य जीव संरक्षण एवं अभ्यारण्य	58
8. मृदाएँ एवं मृदा संरक्षण	60
9. राजस्थान की प्रमुख फसलें	63
10. जनसंख्या, जनसंख्या-घनत्व, साक्षरता, और लिंगानुपात	70
11. राजस्थान की जनजातियाँ एवं जनजातीय क्षेत्र	83
12. धात्विक एवं अधात्विक खनिज	87
13. राजस्थान के ऊर्जा संसाधन : परम्परागत एवं गैर परम्परागत	94
14. राजस्थान के पर्यटन स्थल	105
15. राजस्थान में यातायात के साधन	112

16. पशुधन एवं पशु मेले (एक्स्ट्रा) 124

इतिहास एवं संस्कृति

1. राजस्थान की प्राचीन सभ्यताएँ 128

- कालीबंगा, आहड़, गणेश्वर, बालाथल और बैराठ इत्यादि

2. राजस्थान की महत्वपूर्ण ऐतिहासिक घटनाएँ, प्रमुख राजवंश 136

3. प्रशासनिक व राजस्व व्यवस्था 191

4. राजस्थान के प्रमुख व्यक्तित्व 200

5. 1857 की क्रांति में राजस्थान का योगदान 216

6. राजस्थान में जनजाति एवं किसान आंदोलन 225

7. प्रजामण्डल 240

8. राजस्थान का एकीकरण 251

कला एवं संस्कृति

1. राजस्थान की स्थापत्य कला, किले स्मारक महल इत्यादि 257

2. बावड़ी एवं हवेलियाँ 269

3. राजस्थान के मेले एवं त्यौहार 274

4. लोक कला, लोक संगीत 286

5. लोक नाट्य एवं लोक नृत्य 291

6. राजस्थान की सांस्कृतिक परम्परा एवं विरासत 298

7. राजस्थान के धार्मिक आंदोलन प्रमुख संत एवं सम्प्रदाय 309

- राजस्थान के महत्वपूर्ण ऐतिहासिक स्थल 317

8. लोक देवता एंव लोक देवियाँ 317

9. राजस्थान के वस्त्र एवं आभूषण 324

10. राजस्थान की चित्रकलाएँ एवं हस्तशिल्प 326

राजस्थानी भाषा

1. राजस्थान की क्षेत्रीय बोलियाँ 334

2. प्रमुख राजस्थानी कृतियाँ एवं प्रमुख राजस्थानी साहित्यकार 337

3. राजस्थनी संत साहित्य एवं लोक साहित्य 341

अध्याय – 4

(अपवाह तंत्र) - नदियाँ, झीलें एवं बाँध

प्रिय छात्रों इस अध्याय के अंतर्गत हम लोग "राजस्थान का अपवाह तंत्र" के बारे में अध्ययन करेंगे। सबसे पहले जानते हैं कि क्या होता है "अपवाह तंत्र"?

अपवाह तंत्र -

जब नदी एक स्थान से दूसरे स्थान पर जल का प्रवाह करती है तब उसे अपवाह तंत्र कहते हैं।अपवाह तंत्र में नदियां एवं उसकी सहायक नदियां शामिल होती हैं।

(अ) बंगाल की खाड़ी में गिरने वाली नदियाँ :

इस अपवाह तंत्र में निम्न प्रमुख नदियां शामिल होती है जैसे चंबल, बनास, काली सिंध, पार्वती, बाण गंगा, खारी, बेडच, गंभीरी आदि। ये नदियां अरावली के पूर्व में बहती हैं इनमें कुछ नदियों का उद्गम स्थल अरावली का पूर्वी घाट तथा कुछ का मध्यप्रदेश का विंध्याचल पर्वत है यह सभी नदियां अपना जल यमुना नदी के माध्यम से बंगाल की खाड़ी में ले जाती हैं।

(ब)अरब सागर में गिरने वाली नदियाँ :-

इस अपवाह तंत्र में इन निम्न प्रमुख नदियां शामिल है जैसे माही, सोम, जाखम, साबरमती, पश्चिमी बनास, लूणी, इत्यादि । पश्चिमी बनास, लूनी गुजरात के कच्छ के रण में विलुप्त हो जाती हैं, ये सभी नदियां अरब सागर की ओर अपना जल लेकर जाती हैं।

(स)अंतः प्रवाह वाली नदियां -

बंगाल की खाड़ी में गिरने वाली नदियां और अरब सागर में गिरने वाली नदियों के अलावा कुछ छोटी नदियां भी हैं जो कुछ दूरी तक प्रभाव में होकर राज्य में अपने क्षेत्र में विलुप्त हो जाती हैं तथा उनका जल समुद्र तक नहीं जा पाता इसलिए इन्हें आंतरिक प्रवाह वाली नदियां कहा जाता है जैसे काकनी, कांतली, साबी घग्गर, मेंथा, बांडी, रूपनगढ़ इत्यादि ।

राजस्थान राज्य की नदियों से संबंधित महत्वपूर्ण तथ्य जो की परीक्षा की दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं -

- राजस्थान की अधिकांश नदियों का प्रवाह क्षेत्र अरावली पर्वत की पूर्व में है
- राजस्थान में चंबल तथा माही के अलावा अन्य कोई नदी बारह मासी नहीं है ।
- राज्य में चूरू व बीकानेर ऐसे जिलें हैं जहाँ कोई नदी नहीं है ।
- गंगानगर में यद्यपि पृथक से कोई नदी नहीं है लेकिन वर्षा होने पर घग्गर नदी का बाढ़ का पानी सूरतगढ़, अनूपगढ़ तक चला जाता है ।
- राज्य के 60% भू-भाग पर आंतरिक जल प्रवाह का विस्तार है।
- राज्य में सबसे अधिक सतही जल चंबल नदी में उपलब्ध है।
- राज्य में बनास नदी का जल ग्रहण क्षेत्र सबसे बड़ा है।
- राज्य में सर्वाधिक नदियां कोटा संभाग में बहती हैं
- राज्य की सबसे बड़ी नदी चंबल है।
- राजस्थान की जीवन रेखा इंदिरा गांधी नहर परियोजना को कहते हैं ।
- रेगिस्तान की जीवन रेखा इंदिरा गांधी नहर परियोजना को कहते हैं
- पश्चिमी राजस्थान की जीवन रेखा इंदिरा गांधी नहर परियोजना को कहते हैं ।
- मारवाड़ की जीवन रेखा लूनी नदी को कहते हैं ।
- बीकानेर की जीवन रेखा कंवर सेन लिफ्ट परियोजना को कहते हैं ।
- राजसमंद की जीवन रेखा नंद समंद झील कहलाती है ।
- भरतपुर की जीवन रेखा मोती झील है ।
- गुजरात की जीवन रेखा नर्मदा परियोजना है।
- जमशेदपुर की जीवन रेखा स्वर्ण रेखा नदी को कहा जाता है इस नदी पर हुंडरू जल प्रपात स्थित है ।
- आदिवासियों की या दक्षिणी राजस्थान की जीवन रेखा माही नदी को कहा जाता है
- पूरे राज्य में बहने वाली सबसे बड़ी नदी बनास है
- भारत सरकार द्वारा राजस्थान भूमिगत जल बोर्ड की स्थापना की गई थी` 1955 में इस बोर्ड का नियंत्रण राजस्थान सरकार को सौंपा गया था। 1971 से इस बोर्ड को भू-जल विभाग के नाम से जाना जाता है इसका कार्यालय जोधपुर में है ।
- राज्य के पूर्णता बहने वाली सबसे लंबी नदी का सर्वाधिक जल ग्रहण क्षेत्र वाली नदी बनास है ।

- चंबल नदी पर भैंसरोडगढ़ (चित्तौड़गढ़) के निकट चूलिया जल प्रपात तथा मांगली नदी पर बूंदी में "भीमलत प्रपात" है ।
- सर्वाधिक जिलों में बहने वाली नदियां चंबल, बनास,लूणी है जो कि प्रत्येक नदी 6 जिलों में बहती है ।
- अंतर्राज्यीय सीमा बनाने वाली नदी एक मात्र नदी है चंबल ,जो कि राजस्थान व मध्यप्रदेश की सीमा बनाती है।
- राजमहल (टोंक) नामक स्थान पर बनास, डाई और खारी नदी का त्रिवेणी संगम स्थित है यहां शिव एवं सूर्य की संयुक्त प्रतिमा स्थित है जो मार्तंड भैरव मंदिर या देवनारायण मंदिर के नाम से जाना जाता है यहां नारायण सागर बांध स्थित है।
- प्रिय छात्रों अब हम प्रत्येक अपवाह तंत्र को विस्तृत रूप से समझते हैं । सबसे पहले हम बंगाल की खाड़ी की ओर चले जाने वाली नदियों का अध्ययन करेंगे –

I. चंबल नदी

प्रिय छात्रों चंबल नदी के बारे में हम समझते हैं कि क्या है इसकी महत्वपूर्ण विशेषताएं -

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

चम्बल नदी एवं इसकी सहायक नदियाँ

- राजस्थान की कामधेनु
- प्राचीन नाम – चर्मण्वती
- कुल लम्बाई लगभग 965 किमी.
- राजस्थान व मध्यप्रदेश की सीमा पर 241 KM लम्बी
- राजस्थान के अन्दर 135 KM लम्बी
- राजस्थान में कुल लम्बाई (241+135) = 376 किमी.

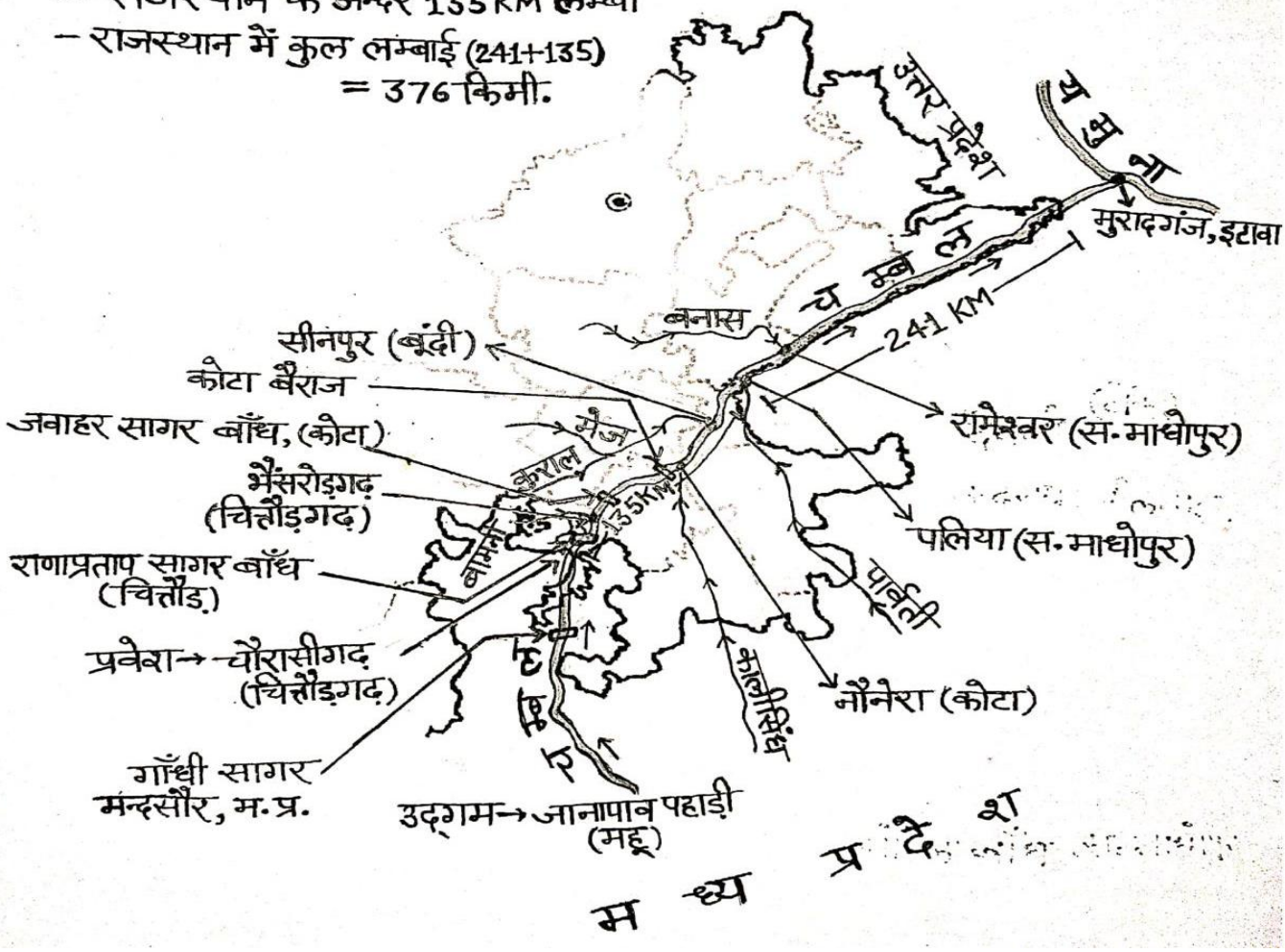

- चंबल नदी राजस्थान की एक मात्र ऐसी नदी है जो प्राकृतिक अंतर्राज्यीय सीमा निर्धारित करती है इस नदी को अन्य नामों से भी जाना जाता है इसके अन्य नाम है, चर्मणवती नदी, कामधेनु नदी, बारह मासी नदी, नित्य वाहिनी नदी ।
- इस नदी की कुल लंबाई 966 किलों मीटर है। यह नदी मध्यप्रदेश, राजस्थान व उत्तरप्रदेश अर्थात् 3 राज्यों में बहती है यह नदी मध्यप्रदेश में 335 किलों मीटर, राजस्थान में 135 किलों मीटर, उत्तरप्रदेश में 275 किलों मीटर बहती है यह नदी राजस्थान, मध्यप्रदेश तथा उत्तरप्रदेश के मध्य 241 किलों मीटर की अंतर्राज्यीय सीमा भी बनाती है।
- इस नदी का उद्गम स्थल मध्यप्रदेश राज्य के इंदौर जिलें हुआ । क्षेत्र के विंध्याचल पर्वतमाला में स्थित 616 मीटर ऊंची "जाना पाव की पहाड़ी" से होता है मध्यप्रदेश में मंदसौर जिला में स्थित रामपुरा भानपुरा के पठारों में स्थित इस नदी का सबसे बड़ा बांध "गांधी सागर बांध" बना हुआ है।
- यह नदी राजस्थान में सर्वप्रथम चित्तौड़गढ़ जिलें में स्थित चौरासीगढ़ नामक स्थान से प्रवेश करती है इस नदी पर भैंसरोडगढ़ के समीप सबसे बड़ा सबसे ऊंचा जल प्रपात बना है जिसे चूलिया जल प्रपात के नाम से जानते हैं।

- चंबल नदी पर चित्तौड़गढ़ जिलें के रावतभाटा नामक स्थान पर राणाप्रताप सागर बांध बना हुआ है, जो कि जल भराव की क्षमता से राज्य का सबसे बड़ा बांध है इस बांध का 113 वर्ग किलों मीटर में फैला हुआ है।
- चंबल नदी चित्तौड़गढ़ जिलें में बहने के बाद कोटा जिलें में प्रवेश करती है, कोटा जिलें में इस नदी पर जवाहर सागर व कोटा बैराज बांध बना हुआ है कोटा बैराज बांध जल विद्युत उत्पादन के लिए उपयोग में नहीं लिया जाता । कोटा जिलें के नानौरा नामक स्थान पर "काली सिंध नदी" चंबल में आकर मिल जाती है यह स्थान प्राचीन काल में कपिल मुनि की तपस्या स्थली रहा था।
- कोटा तथा बूंदी जिलें की सीमा निर्धारित करती हुई यह नदी बूंदी जिलें में प्रवेश करती है बूंदी जिलें की केशोरायपाटन नामक स्थान पर इस नदी का सर्वाधिक गहरा भाग है जो 113 मीटर की गहराई तक है बूंदी जिलें से आगे चल कर यह नदी कोटा तथा सवाईमाधोपुर की सीमा निर्धारित करती है।
- सवाईमाधोपुर जिलें के खंडार तहसील के रामेश्वर नामक स्थान पर बनास तथा सीप नदी चंबल में आकर मिलती है तथा यहां त्रिवेणी संगम बनाते हैं। सवाई माधोपुर जिलें के पालिया नामक स्थान पर चंबल नदी की सहायक नदी पार्वती इसमें आकर मिलती है। धौलपुर जिलें के पीलहाट होते हुए यह नदी राजस्थान से बाहर निकलती है और उत्तरप्रदेश राज्य में प्रवेश कर जाती है।
- अंत में यह नदी उत्तरप्रदेश राज्य के इटावा जिलें के मुरादगंज कस्बे में 275 किलों में किलों मीटर बहने के बाद यमुना में मिल जाती है यह यमुना की सबसे बड़ी सहायक नदी है।

चंबल नदी से संबंधित अन्य तथ्य -

- चंबल नदी राज्य के कुल अपवाह क्षेत्र का 20.90% भाग मे है। यह नदी "गागेयसूस" नामक स्तनपाई जीव के लिए प्रसिद्ध है।
- चंबल यूनेस्को की विश्व धरोहर के लिए नामित राज्य की एकमात्र नदी है बहाव क्षमता की दृष्टि से राज्य की सबसे लंबी नदी चंबल ही है।
- यह सर्वाधिक सतही जल वाली नदी है इसीलिए इसे "वाटरसफारी नदी" भी कहा जाता है।
- चंबल नदी से सर्वाधिक अवनालिका अपरदन कोटा जिलें में होता है।
- चंबल नदी राज्य के चित्तौड़गढ़, कोटा, बूंदी, सवाईमाधोपुर, करौली और धौलपुर जिलें में बहती है।यह विश्व की एकमात्र ऐसी नदी है जिस पर प्रत्येक 100 किलों मीटर की दूरी पर 3 बड़े बांध बने हुए है और तीनों ही बांध से जल विद्युत उत्पादन होता है।
- चंबल नदी में घड़ियाल सर्वाधिक मात्रा में पाए जाते हैं इस कारण चंबल नदी को घड़ियालों की जन्मस्थली कहा जाता है।

चंबल की सहायक नदियां -

- मध्यप्रदेश में मिलने वाली नदियां - सीवान, रेतम, शिप्रा ।
- राजस्थान में मिलने वाली नदियां - आलनिया, परवण, बनास, कालीसिंध, पार्वती, बामणी, कुराल, छोटी काली सिंध आदि

चंबल नदी पर चार बांध बनाए गए हैं -

1. गांधी सागर बांध - मध्यप्रदेश की भानपुरा तहसील में
2. राणाप्रताप सागर बांध - रावतभाटा (चित्तौड़गढ़).
3. जवाहर सागर बांध - बोरा बास, कोटा
4. कोटा बैराज बांध - कोटा शहर

2. <u>बनास नदी -</u>

- बनास नदी का उद्गम राजसमंद जिलें में स्थित खमनोर की पहाड़ियां से होता है पूर्णत: प्रवाह के आधार पर यह राजस्थान की सबसे लंबी नदी है इसकी कुल लंबाई 480 किलों मीटर है।
- इस नदी को अन्य नामों से जाना जाता है जैसे वन की आशा, वर्णाशा, वनआशा, वशिष्ठ नदी।
- यह नदी 6 जिलों में बहती है यह 6 जिलें क्रम से हैं राजसमंद, चित्तौड़गढ़, भीलवाड़ा, अजमेर, टोंक, सवाईमाधोपुर ।इस नदी के प्रवाह क्षेत्र में भूरी मिट्टी के क्षेत्र का प्रसार पाया जाता है।
- भीलवाड़ा जिलें के बीगोद नामक कस्बे के समीप बनास, बेडच और मेनाल का त्रिवेणी संगम स्थित है।
- टोंक जिलें में देवली नामक स्थान पर बनास नदी में खारी नदी मिलती है बनास नदी टोंक जिलें में सर्पाकार आकार की हो जाती है। टोंक जिलें के

राजमहल नामक स्थान पर बनास, डाई, खारी नदी का त्रिवेणी संगम स्थित है।

- नोट - राज्य की सबसे बड़ी सिंचाई परियोजना इंदिरागांधी नहर परियोजना है जब कि राज्य की सबसे बड़ी पेयजल परियोजना टोंक जिलें में बनास नदी पर निर्मित बीसलपुर बांध परियोजना है इसी बीसलपुर बांध परियोजना से जयपुर शहर को लगातार जलापूर्ति की जा रही है। बीसलपुर बांध का निर्माण अजमेर के चौहान शासक विग्रह राज चतुर्थ (बीसलदेव) ने करवाया था।
- बनास नदी अपने प्रवाह के अंत में सवाईमाधोपुर जिलें के खंडार तहसील के रामेश्वर नामक स्थान पर जाकर चंबल में मिल जाती है अर्थात् बनास चंबल की सहायक नदी है जैसा कि हमने पहले ही पढ़ा था।
- बनास नदी चंबल की सबसे बड़ी सहायक नदी है इस नदी पर नाथद्वारा के पास नंदसमंद बांध का निर्माण कराया गया है जिसको राजसमंद की लाइफ लाइन भी कहा जाता है ।
- इसकी सहायक नदियां बेडच, कोठारी, खारी, मानसी, मोरेल आदि हैं।

बनास नदी की मुख्य सहायक नदियों के नाम है ।

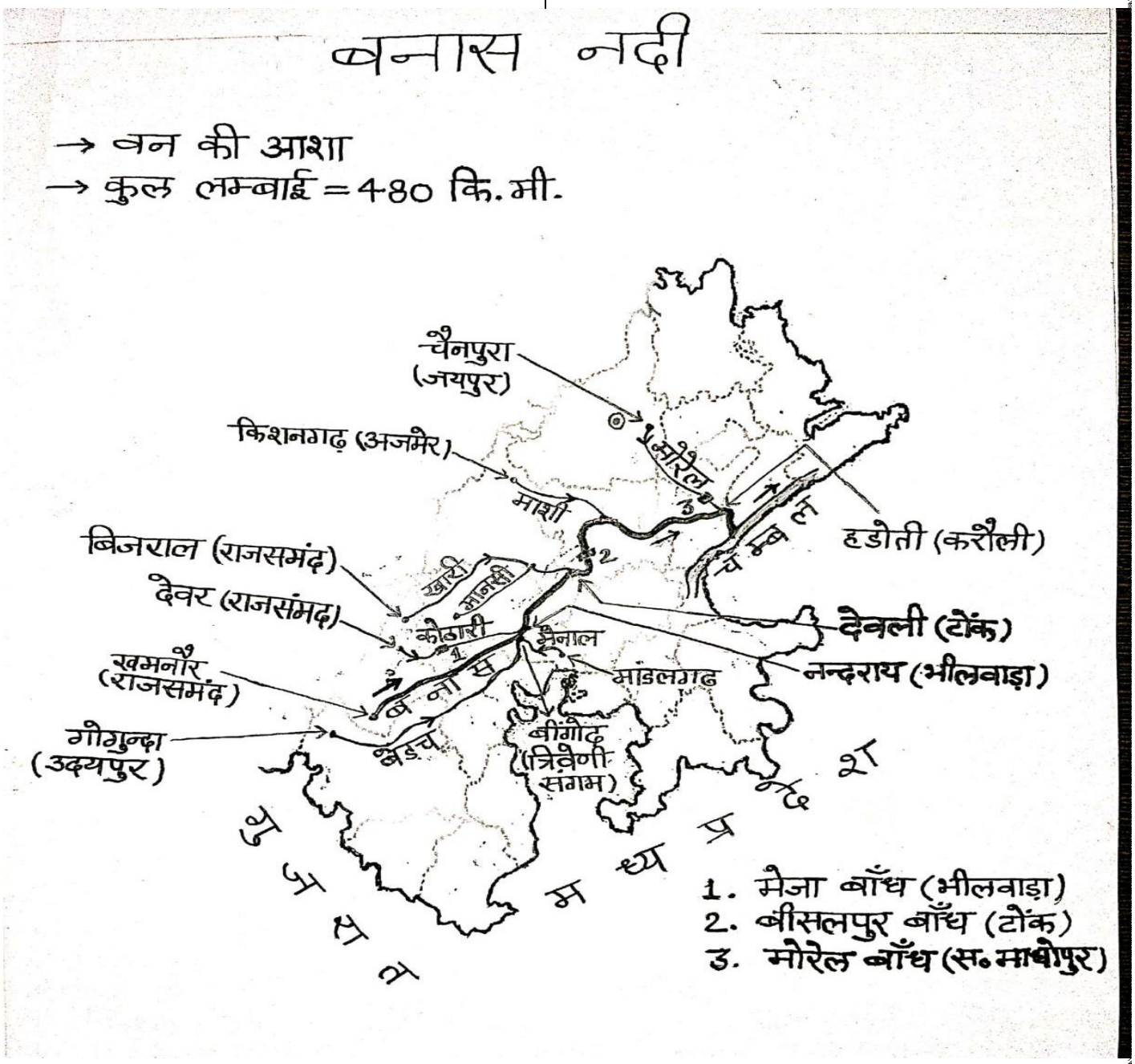

रेवा नदी :-

यह नदी मध्यप्रदेश राज्य के भानपुरा तहसील की पहाड़ियों से निकलती है और पश्चिम में प्रवाहित होती हुई बुद्ध नगर के निकट झालावाड़ जिलें के पचपहाड़ तहसील में प्रवेश करती है । अंत में यह नदी भीलवाड़ा गांव के निकट आहू से मिल जाती है ।

गुंजाली :-

यह एक सहायक नदी है जो चंबल में मिल जाती है । इसका उद्गम मध्यप्रदेश में जाट गांव के पास से है । दौलतपुर गांव के निकट के चित्तौड़गढ़ जिलें में प्रवेश करती है और पूर्व की ओर बहती है । चित्तौड़गढ़ जिलें में यह मोरेन, अमरगंज व कुआँ खेड़ा गांव से होकर निकलती है । अंततः अरनिया गांव के पास यह चंबल नदी में मिल जाती है ।

चंद्रभागा नदी :-

यह छोटी नदी है जो सेमली नामक गांव के निकट से निकलती है । इसके पश्चात् यह झालरापाटन तहसील में केवल 7 किलोमीटर तक प्रवाहित होती है और खाड़ीयाँ गांव के निकट कालीसिंध में मिल जाती है । कार्तिक पूर्णिमा के अवसर पर झालरापाटन कस्बे के निकट चंद्रावती नामक स्थान पर स्नान के लिए हजारों व्यक्ति एकत्रित होते हैं ।

2. अरब सागर में गिरने वाली नदियाँ -

1. लूनी नदी -

- इस नदी का उद्गम स्थल अजमेर जिलें में स्थित नाग पहाड़ी है । पुष्कर से गोविंदगढ़ (अजमेर) तक इसे साक्री के नाम से जाना जाता है। अजमेर में इसे साबरमती, सागरमती, या सरस्वती कहा जाता है, आगे चल कर इसे लूनी नदी के नाम से जाना जाता है।
- यह अरावली के पश्चिम में बहने वाली लूनी नदी सबसे बड़ी नदी है लूनी नदी मरुस्थल की सबसे लंबी नदी भी है।
- इसे अन्य नामों से भी जाना जाता है जैसे - मारवाड़ की जीवनरेखा, मरुस्थल की गंगा, आधी खारी आधी मीठी नदी, अंतः सलिला (जो कि कालिदास ने दिया था), रेल या नेड़ा (जालौर में जाना जाता है)
- इस नदी की कुल लंबाई 320 किलोमीटर है जो कि पूर्णतया बरसाती नदी है। इसका जल बालोतरा (बाड़मेर) तक मीठा तथा बाद में खारा हो जाता है इसलिए इसे आधी मीठी आधी खारी नदी के नाम से जाना जाता है।
- इसकी सहायक नदियां निम्न प्रकार है - सुकड़ी, जवाई, सगाई, लीलड़ी, जोजड़ी, मीठड़ी, सागी इत्यादि
- इसका अपवाह अजमेर, नागौर, पाली, जोधपुर, बाड़मेर और जालौर जिलें में लूनी नदी के तेज प्रवाह के कारण इसे रेल या नेड़ा कहा जाता है ।
- हल्दीघाटी के युद्ध की योजना अकबर ने इसी नदी के तट पर बनाई थी ।
- लूनी एवं बनास राज्य की ऐसी नदियां है जो अरावली पर्वतमाला को मध्य में से विभाजित करती है ।
- लूनी नदी से जोधपुर की जयसमंद झील को पानी की आपूर्ति होती है ।
- लूनी नदी में दाईं ओर से केवल जोजडी नदी मिलती है इसका उद्गम नागौर के पोंडरु गांव की पहाड़ियों से होता है।
- यह नदी अंत में जालौर में बहकर गुजरात के कच्छ जिलें में प्रवेश करती है और फिर कच्छ के रण में विलुप्त हो जाती है।

2. माही नदी

- इस नदी को दक्षिण की गंगा, कांठल की गंगा बांगड़ की गंगा, आदिवासियों की गंगा, दक्षिण राजस्थान की जीवन रेखा या स्वर्ण रेखा आदिवासियों की जीवन रेखा कहा जाता है।
- इस नदी का उद्गम विंध्याचल पर्वतमाला के मध्यप्रदेश के धार जिलें के सरदारपुरा नामक गांव की अमरोरु की पहाड़ियों में स्थित "मेहद झील" से होता है।
- यह राजस्थान में बाँसवाड़ा के खांन्दू नामक स्थान के पास प्रवेश करती है तथा बाँसवाड़ा - डूंगरपुर की सीमा बनाती हुई गुजरात में पंचमहल जिलें में रामपुर के पास प्रवेश करती है।
- माही नदी पर कड़ाना बांध स्थित है । यह नदी आगे चल कर खंभात की खाड़ी में गिरती है।
- इसके प्रवाह क्षेत्र को "छप्पन का मैदान" भी कहा जाता है इस नदी की कुल लंबाई 576 किलोमीटर है तथा केवल राजस्थान में यह 171 किलोमीटर लंबी है।
- डूंगरपुर जिलें में बेणेश्वर के निकट माही नदी, सोम नदी एवं जाखम नदी का संगम है जिसे त्रिवेणी

कालूँवाणा तीर्थ स्थल" इसी मेंथा नदी के किनारे स्थित हैं।

6. काकनी नदी या काकनेय नदी -

काकनी नदी या काकनेय नदी का उद्गम जैसलमेर जिलें के कोठारी गांव से होता है । इस नदी को "मसूरड़ी नदी" के नाम से भी जाना जाता है यह केवल 17 किलोंमीटर बहती है अर्थात् इसकी कुल लंबाई 17 किलोंमीटर है। यह राजस्थान की सबसे छोटी आंतरिक प्रवाह वाली नदी भी है। इसका समापन स्थल जैसलमेर जिलें का बुझनी गांव है जहाँ यह बुझ झील का निर्माण करती है ।

7. रूपनगढ़ नदी -

यह सलेमाबाद (अजमेर) से निकलती है और सांभर के दक्षिण में विलीन हो जाती है इस नदी के किनारे निम्बार्क संप्रदाय की पीठ है।

राजस्थान में नदियों के किनारे बसे प्रमुख नगर -

1. हनुमानगढ़ (राजस्थान)-

- राजस्थान का हनुमानगढ़ नगर घग्घर नदी के किनारे बसा हुआ है

2. कोटा (राजस्थान)-

- राजस्थान का कोटा नगर चम्बल नदी के किनारे बसा हुआ है।

3. चित्तौड़गढ़ (राजस्थान)-

- राजस्थान का चित्तौड़गढ़ नगर बेड़च नदी के किनारे बसा हुआ है।

4. टोंक (राजस्थान)-

- राजस्थान का टोंक नगर बनास नदी के किनारे बसा हुआ है।

5. झालावाड़ (राजस्थान)-

- राजस्थान का झालावाड़ नगर काली सिंध नदी के किनारे बसा हुआ है।

6. गुलाबपुरा (राजस्थान)-

- राजस्थान का गुलाब पुरा नगर खारी नदी के किनारे बसा हुआ है।

7. जालौर (राजस्थान)-

- राजस्थान का जालौर नगर सुकड़ी नदी के किनारे बसा हुआ है।

8. अनुपगढ़ (राजस्थान)-

- राजस्थान का अनुपगढ़ घग्घर नदी के किनारे बसा हुआ है।

9. नाथद्वारा (राजसमंद, राजस्थान)-

- राजस्थान राज्य के राजसमंद जिलें का नाथद्वारा नगर बनास नदी के किनारे बसा हुआ है।

10. भीलवाड़ा (राजस्थान)-

- राजस्थान का भीलवाड़ा नगर कोठारी नदी के किनारे बसा हुआ है।

11. विजयनगर (राजस्थान)-

- राजस्थान का विजय नगर खारी नदी के किनारे बसा हुआ है।

12. सूरत गढ़ (राजस्थान)-

- राजस्थान का सूरत गढ़ नगर घग्घर नदी के किनारे बसा हुआ है।

13. पाली (राजस्थान)-

- राजस्थान का पाली नगर बांडी नदी के किनारे बसा हुआ है।

14. सुमेरपुर (पाली, राजस्थान)-

- राजस्थान राज्य के पाली जिलें का सुमेरपुर नगर जवाई नदी के किनारे बसा हुआ है।

15. आसींद (भीलवाड़ा, राजस्थान)-

- राजस्थान राज्य के भीलवाड़ा जिलें का आसींद नगर खारी नदी के किनारे बसा हुआ है।

16. सवाईमाधोपुर (राजस्थान)-

- राजस्थान का सवाईमाधोपुर नगर बनास नदी के किनारे बना हुआ है।

17. बालोतरा (बाड़मेर, राजस्थान)-

- राजस्थान राज्य के बाड़मेर जिलें का बालोतरा नगर लूनी नदी के किनारे बसा हुआ है।

विभिन्न नदियों के तट पर बसे हुये राजस्थान के नगर

सूत्र	नदी	स्थान
चमको	चम्बल	कोटा

कला झुला	कालीसिंध	झालावाड़
जवा सुमेरपाल	जवाई	सुमेलपुर (पाली)
बड़ा है चित्ता	बेडच	चित्तौड़गढ
खाआ भील	खारी	आसींद (भीलवाडा)
बाल हैं लम्बे	लूनी	बालोतरा (बाड़मेर)

राजस्थान की प्रमुख झीलें -

प्रिय छात्रों राजस्थान की झीलों को हम दो भागों में विभाजित करेंगे -

(अ)खारे पानी की झीलें, (ब) मीठे पानी की झीलें

दोस्तों जैसा कि आपको पता है खारे पानी की झील से आशय ऐसी झील से होता है जिसमें लवणता की मात्रा होती है और मीठे पानी की झील अर्थात् एक ऐसी झील जिसमे लवणता की मात्रा नहीं पाई जाती है । प्रिय छात्रों जैसा कि आपको पता है कि अरावली पर्वतमाला राजस्थान के लगभग बीच में स्थित है जिसके पश्चिम में खारे पानी की झीलें हैं और इसके पूर्व में मीठे पानी की झीलें स्थित हैं । यह अरावली पर्वतमाला महान जल विभाजक रेखा का कार्य करती है । राजस्थान में खारे पानी की 9 झीलें हैं।

राजस्थान का पश्चिमी भाग टेथिस सागर का अवशेष है अतः इस क्षेत्र में पाई जाने वाली झीलें खारे पानी की झीले है । रेगिस्तानी क्षेत्र में खारे पानी की झीलों को प्लाया कहा जाता है तथा तटीय क्षेत्र में इन्हें 'लैगून" कहा जाता है जैसे उड़ीसा में स्थित चिल्का झील सबसे बड़ी लैगून झील है।

दोस्तों झीलों के खारा होने का एक अन्य कारण यह भी है कि दक्षिण पश्चिमी मानसून की अरब सागर की शाखा राज्य में प्रवेश करते समय लवण के भारी कणों को पश्चिमी भाग में गिरा देती है जिससे यहां की मिट्टी तथा झीलों में खारा पानी पाया जाता है । राजस्थान की समस्त खारे पानी की झीलें वायु द्वारा निर्मित हुई है । दक्षिण एशिया में पहली बार विश्व झील सम्मेलन का आयोजन 28 अक्टूबर 2 नवंबर 2007 को भारत में जयपुर में ही किया गया था।

अब हम खारे पानी की झीलों को सबसे पहले विस्तार में समझते हैं और फिर मीठे पानी की झीलों को पढ़ेंगे।

(अ) खारे पानी की झीले -

1. सांभर झील:-

- राजस्थान के जयपुर – फुलेरा मार्ग पर जयपुर से लगभग 65 किलोमीटर दूर स्थित सांभर झील भारत की सबसे बड़ी प्राकृतिक एवं खारे पानी की झील है।
- इस झील का विस्तार 3 जिलों में है - जयपुर, अजमेर और नागौर, लेकिन सर्वाधिक विस्तार जयपुर जिलें में है और इसका प्रशासनिक अधिकार नागौर जिलें का है।
- इस झील की लंबाई दक्षिण पूरब से उत्तर पश्चिम की ओर लगभग 32 किलो मीटर है और चौड़ाई 3 से 12 किलोमीटर है इसका कुल अपवाह क्षेत्र 500 वर्ग किलोमीटर है।
- सांभर झील में मेंथा नदी, रूपनगढ़ नदी, खारी नदी और खंडेला नदी आकर मिलती हैं ।इस झील पर भारत सरकार की "हिंदुस्तान साल्ट लिमिटेड कंपनी" द्वारा उत्पादन कार्य किया जा रहा है ।इस झील में प्रति 4 मीटर की गहराई पर 350 लाख टन उत्पादन होता है जो भारत के कुल उत्पादन का 8.7% सांभर झील से ही उत्पादित होता है।

इस झील से संबंधित अन्य महत्वपूर्ण तथ्य -

- सांभर झील "स्वाईसरुबीना"नामक शैवालों के लिए प्रसिद्ध है । इस शैवाल से 60% प्रोटीन प्राप्त होता है।
- यह झील अन्य महत्वपूर्ण बिन्दुओं के लिए भी जानी जाती है जैसे -
- तीर्थ स्थली देव्यानी अर्थात् तीर्थों की नानी,
- शाकंभरी माता का मंदिर,
- संत हिमामुद्दीन की पुण्य भूमि,
- जहांगीर का ननिहाल,
- अकबर की विवाह स्थली
- चौहानों की राजधानी

- ऐसा माना जाता है कि इस झील का निर्माण बिजोलिया शिलालेख के अनुसार चौहान वंश के संस्थापक वासुदेव चौहान द्वारा करवाया गया था।
- इस झील का आकार आयताकार है । इस झील पर सन् 1857 में अंग्रेजों द्वारा स्थापित सांभर साल्ट म्यूजियम स्थित है।
- पर्यटन के क्षेत्र में रामसर साइट के नाम से भी इसे जाना जाता है।

2. पचपदरा झील:-

- ऐसा माना जाता है कि 400 ईसा पूर्व पंचानामक एक भील व्यक्ति के द्वारा एक दलदल को सुखाकर इस झील के आस - पास की बस्तियों का निर्माण करवाया गया था इसलिए इस झील को पचपदरा झील कहते हैं
- यह झील राजस्थान राज्य के बाड़मेर जिलें के बालोतरा में स्थित है।
- इस झील से प्राचीन समय से ही खारवाल जाति के 400 परिवार मोरली वृक्ष की टहनियों से भी नमक के (क्रिस्टल) स्फटिक तैयार करते थे।
- इस झील में 98% सोडियम क्लोराइड की मात्रा पाई जाती है इस झील का नमक खाने के लिए सबसे उपयुक्त है।

3. डीडवाना झील:-

- यह झील नागौर जिलें के डीडवाना में स्थित है।
- इस झील से प्राप्त नमक खाने योग्य नहीं है। जिसे ब्रायन कहा जाता है।
- इस झील में राजस्थान सरकार द्वारा राजस्थान स्टेट केमिकल वर्क्स नामक दो उद्योग स्थापित किए गए हैं जो कृत्रिम रूप से कागज के उत्पादन का निर्माण करते हैं । इसके अलावा इस नमक का उपयोग चमड़ा उद्योग में भी होता है।
- कृत्रिम रूप से कागज का उत्पादन करने के लिए सोडियम सल्फेट का निर्माण इसी झील के द्वारा किया जाता है।
- इस झील का क्षेत्रफल 4 वर्ग किलों मीटर है।
- यहां का नमक विभिन्न रासायनिक क्रियाओं में प्रयुक्त होता है।
- $Na_2 SO_4$ वाले नमक का उपयोग चमड़ा साफ करने में, कागज गलाने में किया जाता है ।

4. लूणकरणसर झील:-

- यह झील राजस्थान के बीकानेर जिलें में स्थित अत्यंत छोटी झील है।
- छोटी होने के कारण यहां से थोड़ी बहुत मात्रा में निकलने वाले नमक से स्थानीय लोगों को ही आपूर्ति हो पाती है।
- लूणकरणसर "मूंगफली" के लिए प्रसिद्ध होने के कारण "राजस्थान का राजकोट"कहलाता है।

प्रिय पाठकों, राजस्थान में खारे पानी की चार बड़ी झीलें हैं जिनके बारे में हमने डिस्कस कर लिया है इसके अलावा राजस्थान में खारे पानी की छोटी-छोटी अन्य झीलें भी हैं वह निम्न इस प्रकार है -

- रेवासा झील सीकर में स्थित है।
- तालछापर झील चूरू में स्थित है।
- डेगाना झील नागौर में स्थित है।
- फलोदी झील जोधपुर में स्थित है।
- कावोद झील जैसलमेर में स्थित है।
- पोकरण जैसलमेर में स्थित है।
- कुचामन झील नागौर में स्थित है इत्यादि।

(ब)<u>राजस्थान में मीठे पानी की झीलें -</u>

विस्तृत वर्णन -

1. पुष्कर झील:-

तट राज्य का प्रथम कोयला आधारित संयंत्र स्थापित किया गया है।

- एडवर्ड सागर झील जिसे गैपसागर झील भी कहा जाता है राज्य के डूंगरपुर जिलें में स्थित है । इस झील के तट पर पूजा राज (महाराव पूजा) द्वारा निर्मित प्रसिद्ध "बादल महल" स्थित है
- मान सागर झील राज्य के जयपुर जिलें में स्थित है जबकि मानसरोवर झील राज्य के झालावाड़ तथा सवाई माधोपुर जिलें में स्थित है ।
- झालावाड़ जिलें में स्थित मानसरोवर झील को काडला झील भी कहते है।
- जैसलमेर में स्थित अमर सागर, गडसीसर झील तथा बुझ मीठे पानी की झीले हैं जब कि केछोर तथा कावोर झील खारे पानी की झीले है।

राजस्थान के प्रमुख बाँध एवं विभिन्न नदी घाटी परियोजनाएं

(i) भाखड़ा – नांगल परियोजना -

- भाखड़ा – नांगल परियोजना सतलज नदी पर बनी हुई है। यह भारत देश की सबसे बड़ी बहु उद्देशीय परियोजना है जो कि राजस्थान, पंजाब एवं हरियाणा की मिश्रित परियोजना है।
- इस परियोजना के निर्माण का सर्वप्रथम विचार 1908 में गवर्नर "सर लुई सडेन" के द्वारा दिया गया था और इसका निर्माण कार्य 1948 के बाद प्रारंभ हुआ।
- इस परियोजना का निर्माण दो चरणों में पूरा किया गया -

1. **भाखड़ा बांध** -

- भाखड़ा बांध यह देश का तीसरा (वर्तमान में) सबसे ऊंचा बांध है जिसकी आधार शिला 17 नवंबर 1955 को देश के प्रधान मंत्री जवाहर लाल नेहरू के द्वारा रखी गई जो कि अक्टूबर 1960 में अमेरिकी बांध निर्माता हार्वेस्लो कम के निर्देशन में बनकर तैयार हुआ।
- इस बांध को 22 अक्टूबर 1963 को जवाहरलाल नेहरू ने देश को समर्पित कर दिया था ।
- इस बांध का निर्माण सतलज नदी पर हिमाचल प्रदेश के बिलासपुर जिलें में किया गया है।
- इस बांध की ऊंचाई 255.55 मीटर (लगभग 226 मीटर) तथा इसकी लंबाई 518.16 मीटर तथा इसकी चौड़ाई 9.14 मीटर है।
- इस बांध के पीछे के जलाशय को गोविंद सागर झील कहा जाता है जो कि भारत की सबसे बड़ी मीठे पानी की झील है।
- भारत का दूसरा सबसे ऊंचा बांध टिहरी बांध पहला सरदार सरोवर बांध है जो कि नर्मदा नदी पर गुजरात में बना हुआ है।
- इस बांध के दोनों किनारों पर विद्युत संयंत्र स्थापित किए गए हैं जिनकी कुल विद्युत क्षमता पहले की 540 मेगा वाट दूसरी की 785 है।

2. **नांगल बांध** -

- यह बांध पंजाब के जिलें में सतलज नदी पर स्थित है । यह भाखड़ा बांध से 12 किलों मीटर दूर है।
- इस बांध की लंबाई 340.8 मीटर है । तथा ऊंचाई 29 मीटर है।
- इस बांध पर दो विद्युत संयंत्र लगाए गए हैं - 1. गंगेवाल - 83.58 मेगावाट, 2. कोटला 84.57 मेगावाट।
- इस बांध से सिंचाई के लिए दो नहरें निकाली गई है - 1. भाखड़ा नहर 2. बारी –बिस्ट दो आब।
- भाखड़ा – नांगल समझौता 1959 के अनुसार राजस्थान को इसका 22.15% हिस्सा प्राप्त होता है।
- इस परियोजना की कुल विद्युत क्षमता 1493 मेगा वाट एवं सिंचाई क्षमता 14.6 लाख हेक्टेयर है जिसमें से राजस्थान को 2.3 लाख हेक्टेयर पर सिंचाई उपलब्ध होती है एवं 227. 32 मेगा वाट विद्युत प्राप्त होती है।
- राजस्थान के हनुमानगढ़ जिलें में इस परियोजना से सिंचाई सुविधा एवं सीकर, चूरू, झुंझुनू, हनुमानगढ़, गंगानगर, एवं बीकानेर को पेयजल की आपूर्ति कराई जाती है।
- भाखड़ा नांगल बांध परियोजना को पंडित जवाहर लाल नेहरू ने "चमत्कारी विराट वस्तु" की संज्ञा दी थी।

(ii) इन्दिरा गाँधी नहर परियोजना

- इस परियोजना का निर्माण कार्य / आधारशिला तत्कालीन गृहमंत्री श्री गोविंद वल्लभ पंत ने 31

नोट – प्रिय उम्मीदवारों, यहाँ हमने केवल SAMPLE ही दिया है, पूरा टॉपिक नही दिया है / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए नीचे दिए गये हमारे संपर्क नंबर पर कॉल कीजिए या लिंक पर क्लिक करें / दोस्तों, हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी "राजस्थान 3rd Grade Level – 2 (REET मुख्य परीक्षा)" में पूर्ण संभव मदद करेंगे और आप "INFUSION NOTES" के साथ इस परीक्षा में जरूर सफल होंगे, धन्यवाद /

संपर्क करें – 8233195718, 8504091672, 9694804063, 9887809083,

प्रिय दोस्तों, अब तक हमारे नोट्स में से अन्य परीक्षाओं में आये हुए प्रश्नों के परिणाम –

EXAM (परीक्षा)	DATE	हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्न
RAS PRE. 2021	27 अक्तूबर	74 प्रश्न आये
REET (लेवल -I, 2)	2021	98 (150 में से)
SSC GD 2021	16 नवम्बर	68 (100 में से)
SSC GD 2021	30 नवम्बर	66 (100 में से)
SSC GD 2021	01 दिसम्बर	65 (100 में से)
SSC GD 2021	08 दिसम्बर	67 (100 में से)
राजस्थान S.I. 2021	13 सितम्बर	113 (200 में से)
राजस्थान S.I. 2021	14 सितम्बर	119 (200 में से)

राजस्थान S.I. 2021	15 सितम्बर	126 (200 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (1st शिफ्ट)	79 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	103 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (1st शिफ्ट)	95 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	91 (150 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (1st शिफ्ट)	59 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	61 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (1st शिफ्ट)	56 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	57 (100 में से)
U.P. SI 2021	14 नवम्बर 2021 1st शिफ्ट	91 (160 में से)
U.P. SI 2021	21नवम्बर2021 (1st शिफ्ट)	89 (160 में से)

& Many More Exams like REET, UPSC, SSC Etc.

दोस्तों, इनका proof देखने के लिए नीचे दी गयी लिंक पर क्लिक करें या हमारे youtube चैनल पर देखें –

RAS PRE. – https://www.youtube.com/watch?v=p3_i-3qfDy8&t=136s

VDO PRE. – https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk856W18&t=202s

Patwari – https://www.youtube.com/watch?v=X6mKGdtXyu4&t=103s

अन्य परीक्षाओं में भी इसी तरह प्रश्न आये हैं Proof देखने के लिए हमारे youtube चैनल (Infusion Notes) पर इसकी वीडियो देखें या हमारे नंबरों पर कॉल करें।

संपर्क करें- 9887809083, 8233195718, 9694804063, 8504091672

ONLINE ORDER के लिए OFFICIAL WEBSITE	Website- https://bit.ly/3rd-grade-mains-notes
PHONE NUMBER	+918504091672 9887809083 +918233195718 9694804063
TELEGRAM CHANNEL	https://t.me/infusion_notes
FACEBOOK PAGE	https://www.facebook.com/infusion.notes
WHATSAPP करें	https://wa.link/hx3rcz

FREE SAMPLE

अध्याय – II

राजस्थान की जनजातियाँ एवं जनजातीय क्षेत्र

राजस्थान की जनजातियाँ

सहरिया :

- राजस्थान की एकमात्र आदिम जनजाति (भारत सरकार द्वारा घोषित)।
- बारां जिलें के किशनगंज एव शाहबाद जिलों में सर्वाधिक संख्या।
- **सहरियों का मुखिया** : कोतवाला
- बड़ें गांव को 'सहराना' कहा जाता है।
- छोटो बस्ती को 'सहरोल' कहा जाता है।
- गाँव के बीच में स्थित सामुदायिक केन्द्र दालिया/हथाई कहलाता है।
- सहरियों की पंचायती व्यवस्था त्रि-स्तरीय होती है /
- **पंचताई** : पाँच गाँवों की पंचायती।
- **एकदसिया** : 11 गाँवों की पंचायती।
- **चौरासिया** : 84 गाँवों की पंचायती।
- चौरासी गाँवों की सभा सीताबाडो के वाल्मिकि मंदिर में होती है।
- सहरिया 'वाल्मिकि' को अपना आदि पुरुष मानते है।
- सहरियों की कुलदेवी कोडिया माता।
- तेजाजी एवं भैरव की भी पूजा करते हैं ।
- दीपावली पर 'हीड़' गाते है।
- होली के अवसर पर लट्ठमार होली खेलते है। राई नृत्य किया जाता है।
- मकर संक्रान्ति के अवसर पर लकड़ी के डण्डो से लेंगी खेला जाता है।
- वर्षा ऋतु में आला एवं लहंगी गीत गाया जाता है।
- **कपिलधारा का मेला** : कार्तिक पूर्णिमा
- **सीताबाड़ी का मेला** : ज्येष्ठ पूर्णिमा। इसे 'सहरियों का कुम्भ' भी कहते है।
- सहरिया महिलाएँ गोदना गुदवाती है परंतु पुरुषों का मनाही है।
- **धारी संस्कार** : मृतक के तीसरे दिन उसकी अस्थियों एवं राख को एक बर्तन से ढककर छोड़ दिया जाता है, अगले दिन उस जगह वैसी ही आकृति बनी होती है, यह समझा जाता है कि व्यक्ति का अगला जन्म उसी आकृति के अनुसार होगा।
- सहरिया पेड़ों पर घर बनाकर रहते हैं। उसे 'गोपना' कहते हैं ।
- अनाज एवं घरेलू सामान रखने की छोटी कोठी : कुसिली।
- अनाज व घरेलू सामान रखने की बड़ी कोठी : भडली।

अर्थव्यवस्था : सहरिया लोगों को जहाँ संमतल भूमि मिल जाती है पर कृषि एवं पशुपालन करते हैं। कृषि कार्यों में 45 प्रतिशत, कृषक मजदूरी 35 प्रतिशत कार्यों में संलग्न व शेष वनों से लकड़ी व वन उपज एकत्रित करना, खनन कार्य करना। इस जाति में शिक्षा का अत्यंत अभाव है। अब शिक्षा का विकास हो रहा है। सहरिया क्षेत्र में मामूनी की संकल्प संस्था, अच्छा कार्य कर रही है ।

कंजर :-

- मुख्यतया हाड़ौती क्षेत्र में।
- मुख्य व्यवसाय : चोरी करना।
- चोरी करने से पूर्व देवता से आशीर्वाद मांगते है, जिसे ये 'पातो मांगना' कहते है।
- जोगणिया माता (चितौड़गढ़) : कंजरों की कुलदेवी।
- चौथ माता (चौथ का बरवाड़ा, सवाई माधोपुर)
- रक्त दंजी माता : बूंदी।
- हनुमान जी : आराध्य देव।
- हाकम राजा का प्याला पीने के बाद झूठ नहीं बोलते हैं।
- मरणासन्न व्यक्ति के मुँह में शराब डाली जाती है।
- शव को दफनाते है।
- इनके मुखिया को 'पटेल' कहते है।
- मोर का मांस खाते है।
- इनके घरों में पीछे की तरफ खिड़की अनिवार्य होती है।
- महिलाएँ चकरी नृत्य करती है। नृत्य करते समय विशेष प्रकार का पायजामा पहनते है, जिसे 'खूसनी' कहते है।

अर्थव्यवस्था –

कुछ लोग ठेला , टेम्पू चलाते है | ईश्वर का आशीर्वाद भी प्राप्त करते हैं | इसे पाती मांगना कहते है |

कथौड़ी :-

- उदयपुर जिलें में अधिक संख्या में।
- मूल रूप से महाराष्ट्र के है।
- खेर के वृक्ष से कत्था बनाते है इसलिए कथौड़ी कहते है।
- कथौडी दूध नहीं पीते है।
- कथौड़ी शराब पीते है एवं महिलाएं भी पुरुषों के बराबर बैठकर पीती है।
- महिलाएं गहने नहीं पहनती, गोदना गुदवाती है।

- कथौड़ी महिला द्वारा पहने जाने वाली साड़ी 'फड़का' कहलाती है।
- इनका मुखिया 'नायक' कहलाता है।
- **प्रमुख कविता** :डूंगर देव, वाद्य देव, भारी माता, कंसारी माता।
- कथौड़ी एक संकटग्रस्त जनजाति है, केवल 35-40 परिवार ही बचे है।
- इनको 'मनरेगा' में विशेष लाभ दिया जाता है पूरे परिवार को 250 दिन का रोजगार दिया जाता है।
- कथौडी पुरूषों द्वारा 'सावलिया नृत्य' नवरात्रा के दिनो मे किया जाता है और महिलाओं द्वारा होली पर होली नृत्य करते है।
- कथौड़ी झोंपडे को 'खोलरा' कहते है।

डामोर :

- मुख्यत : उदयपुर, डूंगरपुर, बाँसवाड़ा जिलें में।
- सर्वाधिक जनसंख्या : डूंगरपुर
- डूंगरपुर जिलें की सीमलवाड़ा पंचायत समिति' को डामरिया क्षेत्र कहते है।
- एकमात्र जनजाति जो वनाश्रित नहीं है।
- कृषि एवं पशुपालन करते है।
- डामोर अपनी उत्पति 'राजपूतों' से मानते है।
- डामोर पुरूष महिलाओं के समान गहने पहनते है।
- होली के अवसर पर किया जाने वाला कार्यक्रम 'चाड़िया' कहलाता है।
- मुखिया को मुखी कहते है।
- डामोर बहु विवाह करते है।
- विवाह का आधार वधु मूल्य कहते है।

अर्थव्यवस्था : मुख्य रूप से कृषि कार्यों में संलग्न । कार्यो में संलग्न । डामोर पशुधन को लक्ष्मी मानकर उनकी पूजा दीपावली के अवसर पर विशेष रूप से करते हैं। डामोर गायों का श्रृंगार करते हैं तथा गायें रमाड़ते हैं। डामोर जनजाति गुजरात के पंचमहल में भरने वाले झेलाबावसी ' के मेले । में, विशेष रूप से भाग लेती है । डूँगरपुर जिलें में भरने वाला ग्यारस की रेवाड़ी का मेला जो भाद्रपद-शुक्ल को भरता है में भी भाग लेते हैं।

सांसी :

- भरतपुर जिलें में अधिक संख्या में है।
- इनकी उत्पति सांसमल से मानी जाती है।
- इनकी दो उपजातियाँ है : बीजा, माला।
- सांसी विधवा विवाह नहीं करतें हैं ।
- 'भाखर बावजी' कुलदेवता की कसम खाने के बाद ये झूठ नहीं बोलते है।
- कसम खाते समय यह एक हाथ में कुल्हाड़ी एव दूसरे हाथ में पीपल का पत्ता रखते है।
- (भाखर बावजी के मंदिर में) लड़को को शादी के बाद अपने चरित्र की परीक्षा देनी पड़ती है, जिसे 'कूकड़ी' रस्म कहते है।
- सिकोदरी माता इनकी प्रमुख आराध्य देवी है।

गरासिया :

- **सिरोही** :आबू, पिण्डवाड़ा तहसील में।
- गरासिया महिलाएं सुन्दरता के लिए प्रसिद्ध है।
- प्रेम विवाह को अधिक तव्वजों दी जाती है।

विवाह के प्रकार : मोर बंधिया विवाह (परम्परागत)

- पहरावणा विवाह
- ताणना विवाह (पैसे देकर या छीनकर)
- मेलवो विवाह (बाल विवाह के बाद बड़ी होने पर लडको को ससुराल छोड़कर आना)।
- **खेवणो विवाह** : इसे माता विवाह भी कहते है, शादीशुदा महिला अपने प्रेमी के साथ भाग जाती है।
- सेवा विवाह (घर जंवाई)।
- गरासिये के मुखिये को सहलोत या पालवी कहते है।
- सफेद पशु एवं मोर को पवित्र मानते है।
- नक्की झील मे अस्थियों का विसर्जन करते है।
- 12वें दिन : अंतिम संस्कार।
- गरासिया राजस्थान की तीसरी बड़ी जनजाति है।

गरासियों की जातीय पंचायत के प्रकार :

- मोटी न्यात/ ऊँचलो न्यात : उच्च श्रेणी के लोग होते है, जिन्हें 'बाबीर-हाइया' कहते है।
- नेनकी न्यात : इसमें शामिल लोगों को माडरिया कहा जाता है।
- निजली न्यात
- जब कोई गरासिया पुरूष भील महिला से शादी कर लेता है तो उसे भील गरासिया कहते है और जब कोई गरासिया महिला भील पुरूष से शादी कर लेती है तो उसे गमेती गरासिया कहते है।
- हूरे/मोगी : मृतकों की याद में बनाएँ जाने वाले स्मारक।
- हेलरू : गरासियों की सहकारी संस्था।

गरासियों के प्रमुख मेले :

- **सियावा गाँव का मेला** : गणगौर, इस मेले में प्रेम विवाह अधिक होते है।
- **कोटेश्वर मेला** : यह अम्बा जी में भरता है।
- **चेतर-विचितर मेला** : देलवाड़ा।
- **अनाज भंडार की कोठिया** : सोहरी।

अर्थव्यवस्था : पशुपालन व कृषि 185 प्रतिशत कृषि कार्यों में संलग्न वर्षाकालीन कृषि के आलावा लकड़ी काटना , मजदूरी , ढोर चराना व शिकार करना /

अध्याय – 15

राजस्थान में यातायात के साधन

- **राजस्थान राज्य में परिवहन**

सड़क परिवहन

स्वतन्त्रता प्राप्ति के समय राज्य में सड़कों की स्थिति काफी असंतोषजनक थी। वर्ष 1949 में राज्य में सड़कों की कुल लम्बाई 13,553 किमी. थी। उस समय सड़कों का घनत्व मात्र 3.96 किमी./100 वर्ग किमी. तथा एक लाख जनसंख्या पर मात्र 85.24 किमी. सड़कें थी, जो मार्च, 2019 तक बढ़कर 264244.05 किमी. हो गई है। अब राज्य में सड़कों का घनत्व 31 मार्च, 2019 तक 77.21 किमी. प्रति 100 वर्ग किमी. है, जबकि राष्ट्रीय घनत्व 143.09 है। राज्य में प्रति लाख जनसंख्या पर सड़कों की लम्बाई 345.36 किमी. है, जबकि देश में 436.38 है। राजस्थान में दिसम्बर, 2019 तक लगभग 89.90% गाँव बी.टी. (डामर) की सड़कों से जुड़े हुए हैं ।

राज्य सरकार द्वारा जनगणना 2011 के अनुसार उन गांवों को सड़कों से जोड़ने की योजना तैयार की है जो अभी तक सड़कों से नहीं जुड़े थे। पहले चरण के तहत 57 गांवों को सड़कों से जोड़ दिया गया है और 330 गांवों में कार्य प्रगति पर है।

गत दो वर्ष के दौरान अर्जित उपलब्धियां

- पिछले दो वर्षों के दौरान सड़क विकास पर ₹10,788.31 करोड़ खर्च हुए। 4.248 किलोमीटर लंबाई की नई सड़कों और 689 किलोमीटर लंबाई के राष्ट्रीय राजमार्गों का निर्माण किया गया। 3,159 किलोमीटर राज्य राज मार्ग एवं मुख्य जिला सड़कों का विकास किया गया।
- 16,967 किलोमीटर लम्बाई की अन्य जिला सड़कों एवं ग्रामीण सड़कों का सुदृढीकरण एवं नवीनीकरण किया गया। 193 नए गांवों और बस्तियों को सड़कों से जोड़ा गया।
- पिछले वर्षों में राज्य के सड़क तंत्र को बेहतर बनाने के लिए काफी प्रयास किए गए हैं, फिर भी बहुत बडा अन्तराल है, जिन पर विचार किये जाने की आवश्यकता है। वर्ष 1949 में सड़को की 13,553 किलोमीटर लम्बाई थी, जो मार्च, 2020 तक बढ़कर 2,69,028.16 किलोमीटर हो गयी है।
- 31 मार्च, 2020 तक राज्य में सड़कों का घनत्व 78.61 किलोमीटर प्रति 100 वर्ग किलोमीटर है, जबकि राष्ट्रीय स्तर पर सड़क घनत्व 152.04 किमी प्रति 100 वर्ग किलोमीटर है।

राज्य में 31.03.2020 तक सड़कों की लंबाई

क्र. सं.	वर्गीकरण	डामर	मैटल	ग्रेवल	मौसमी	योग
1	राष्ट्रीय राजमार्ग	9603.55	0.00	8.00	1006.54	10618.09
2	राज्य राजमार्ग	15580.00	4.20	0.00	37.05	15621.25
3	मुख्य जिला सड़क	8597.39	2.00	47.25	133.31	8779.95
4	अन्य जिला सड़क	45435.91	3184.12	473.18	4698.31	53791.52
5	ग्रामीण सड़क	139623.23	1692.16	36223.39	2678.57	180217.35
महायोग		**218840.08**	**4882.48**	**36751.82**	**8553.78**	**269028.16**

राजस्थान में राष्ट्रीय राजमार्ग

- राज्य में सर्वप्रथम टोंक से 1952 में राजकीय बस सेवा शुरू हुई। राजस्थान में प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना 25 दिसम्बर, 2000 से प्रारम्भ की गई, तो राजस्थान राज्य ग्रामीण बस सेवा का उद्घाटन 14 दिसम्बर, 2012 उदयपुर बस स्टैण्ड से हुआ। रिडकोर (RIDCOR) - रोड़ इन्फ्रास्ट्रक्चर डवलपमेंट कम्पनी ऑफ राजस्थान ।

छोटा राष्ट्रीय राजमार्ग-NH-919 (5 किमी.)
अलवर, दूसरा NH-156 (930 किमी.) चित्तौड़गढ़,
तीसरा - NH-168A (10 किमी.) जालौर

क्र.सं.	नई NH संख्या	पुरानी NH संख्या	कुल लम्बाई	राजस्थान में NH लम्बाई	वे राज्य जहाँ से गुजरता है	राजस्थान में गुजरने वाले स्थान
1.	709	-	248.59	60.30	हरियाणा, राजस्थान	झुंझुनू में पिलानी के पास हरियाणा सीमा से चुरू में राजगढ़ रोड़ तक
2.	11	15,11	847.7	759.70	हरियाणा, राजस्थान	जैसलमेर में प्याजलार से बीकानेर चुरू सीकर झुंझुनू में सिंघाना के पास हरियाणा बॉर्डर तक।
3.	311	-	46	46	राजस्थान	झुंझुनू में सिंघाना के पास NH-11 से टीटनवाड़ा तक
4.	911	-	459	459	राजस्थान	जोधपुर, जैसलमेर, बीकानेर, गंगानगर
5.	911A	-	30.81	30.81	राजस्थान	बीकानेर
6.	919	71B	72.90	5.00	हरियाणा, राजस्थान	अलवर (हरियाणा के रेवाड़ी से पलवल तक)
7.	21	11	465	200	राजस्थान, उत्तरप्रदेश	जयपुर, दौसा भरतपुर
8.	921		48	48	राजस्थान	अलवर, दौसा,
9.	23	11B	228	228	राजस्थान	कोथून मोड़ (NH-52) जयपुर से

बयाना :

- यह भरतपुर में स्थित है ।
- इसका प्राचीन नाम श्रीपंथ है ।
- यहाँ से गुप्तकालीन सिक्के एवं नील की खेती के साक्ष्य मिले हैं ।

अध्याय – 2

राजस्थान की महत्वपूर्ण ऐतिहासिक घटनाएँ, प्रमुख राजवंश

➢ प्रमुख राजवंशों के महत्वपूर्ण शासकों की राजनितिक एवं सांस्कृतिक उपलब्धियां

➢ गुर्जर प्रतिहार वंश

- गुर्जर प्रतिहारों ने लगभग 200 सालों तक अरब
- डॉ. आर सी. मजूमदार के अनुसार-गुर्जर प्रतिहारों ने छठी से ।।वीं शताब्दी तक अरब आक्रमणकारियों के लिए बाधक का कार्य किया ।
- जोधपुर के बौंक शिलालेख के अनुसार गुर्जर प्रतिहारों का अधिवास मारवाड़ में लगभग 6वीं शताब्दी के द्वितीय चरण में हो चुका था ।
- गुर्जरात्रा प्रदेश में रहने के कारण प्रतिहार गुर्जर प्रतिहार कहलाए।
- गुर्जरात्रा प्रदेश की राजधानी भीनमाल (जालौर) थी । बाणभट्ट ने अपनी पुस्तक ' हर्षचरित ' में गुर्जरों का वर्णन किया है ।
- इस वंश की प्राचीनता बादामी के चालुक्य नरेश पुल्केशिन द्वितीय के ऐहोल अभिलेख में 'गुर्जर जाति' के सर्वप्रथम उल्लेख से मिलती है ।
- डॉ. आर. सी. मजूमदार के अनुसार-प्रतिहार शब्द का प्रयोग मण्डौर की प्रतिहार जाति के लिए हुआ है क्योंकि प्रतिहार अपने आप को लक्ष्मण जी का वंशज मानते थे ।
- चीनी यात्री ह्वेनसांग के यात्रा वृतांत (ग्रंथ) सियूकी में कु-ची-लो (गुर्जर) देश का उल्लेख करता है ।
- अरबी यात्रियों ने गुर्जरों को 'जुर्ज भी कहा है ।
- अल मसूदी प्रतिहारों को अल गुर्जर तथा प्रतिहार राजा को 'बोरा' कहकर पुकारता है। भगवान लाल इन्द्जी ने गुर्जरों को 'गुजर' माना है, जो गुजरात में रहने के कारण गुर्जर कहलाए ।
- देवली, राधनपुर तथा करडाह अभिलेखों में प्रतिहारों को गुर्जर प्रतिहार कहा गया है । डॉ. गौरीशंकर ओझा प्रतिहारों को क्षत्रिय मानते हैं । जॉर्ज केनेडी गुर्जर प्रतिहारों को ईरानी मूल के बताते हैं ।
- मिस्टर जैक्सन ने बम्बई गजेटियर में गुर्जरों को विदेशी माना है ।
- प्रतिहार राजवंश महामारू मंदिर निर्माण वास्तुशैली का संरक्षक था । कनिघंम ने गुर्जर प्रतिहारों को कुषाणवंशी कहा है ।

- डॉ. भंडारकर ने गुर्जर प्रतिहारों को खिज्रों की संतान बताकर विदेशी साबित किया है।
- स्मिथ स्टेनफोनो ने गुर्जर प्रतिहारों को हूणवंशी कहा है ।
- भोज गुर्जर प्रतिहार वंश का शासक था ।
- भोज द्वितीय प्रतिहार राजा के काल में प्रसिद्ध ग्वालियर प्रशस्ति की रचना की गई। मुहणोंत नैणसी (मारवाड़ रा परगना री विगत) के अनुसार-गुर्जर प्रतिहारों की कुल 26 शाखाएं थी इनमें से दो प्रमुख थी - मण्डौर व भीनमाल ।
- गुर्जर प्रतिहारों की कुल देवी चामुंडा माता थी ।

भीनमाल शाखा (जालौर)

संस्थापक - नागभट्ट प्रथम ।

- रघुवंशी प्रतिहारों ने चावडों से प्राचीन गुर्जर देश छीन लिया और अपनी राजधानी भीनमाल को बनाया । भीनमाल शाखा के प्रतिहारों की उत्पति के विषय में जानकारी ग्वालियर प्रशस्ति से मिलती है। जो प्रतिहार शासक भोज प्रथम के समय उत्कीर्ण हुई ।
- प्रसिद्ध कवि राजशेखर के ग्रंथों से भी भीनमाल के प्रतिहारों की जानकारी मिलती है ।

अवन्ति / उज्जैन शाखा

- नागभट्ट प्रथम के समय दूसरी राजधानी के रूप में स्थापित ।

कन्नौज शाखा

- नागभट्ट द्वितीय ने कन्नौज को जीतकर अपने राज्य की राजधानी बनाया ।
- आभानेरी तथा राजौरगढ़ के कलात्मक वैभव गुर्जर प्रतिहार काल के है ।

मण्डौर शाखा (जोधपुर)
संस्थापक - रज्जिल

- गुर्जर प्रतिहारों की प्रारंभिक राजधानी मण्डौर थी ।
- गुर्जर प्रतिहारों की इन शाखाओं में सबसे प्राचीन एवं महत्वपूर्ण मण्डौर के प्रतिहार थे । मंडोर के प्रतिहार क्षत्रीय माने जाते है ।

हरिशचंद्र :-

- हरिशचंद्र को प्रतिहार वंश का संस्थापक प्रतिहारों का गुरु/गुर्जर प्रतिहारों का आदि पुरुष/ गुर्जर प्रतिहारों का मूल पुरुष कहते हैं ।
- हरिशचंद्र की दो पत्नियों में से एक ब्राह्मण तथा दूसरी क्षत्रिय पत्नी थी । क्षत्रिय पत्नी का नाम भद्रा था ।
- इसकी क्षत्रिय पत्नी के चार पुत्र हुए जिनके नाम भोगभट्ट, कद्दक, रज्जिल और दह (दह) थे ।

रज्जिल: :-

- गुर्जर प्रतिहार राजवंश के आदिपुरुष हरिशचंद्र थे, तो मण्डौर के गुर्जर प्रतिहार राजवंश के संस्थापक रज्जिल थे ।
- रज्जिल ने मण्डौर को जीतकर अपने राज्य की राजधानी बनाया ।

नरभट्ट :-

- चीनी यात्री ह्वेनसांग ने नरभट्ट का उल्लेख पिल्लापल्ली नाम से किया है, जिसका शाब्दिक अर्थ साहसिक कार्य करने वाला होता है ।

नागभट्ट प्रथम (730 ई.-760 ई.)

- नागभट्ट प्रथम को 'नागवलोक' तथा इसके दरबार को नागवलोक दरबार कहा जाता था।
- नागभट्ट प्रथम को प्रतिहार साम्राज्य का संस्थापक कहा जाता है ।
- नाग भट्ट प्रथम नरभट्ट का पुत्र था ।
- नागभट्ट प्रथम ने भीनमाल को चांवडों से जीता तथा 730 ई. में भीनमाल को राजधानी बनाया । इसने भीनमाल में प्रतिहार वंश की स्थापना की ।
- ग्वालियर अभिलेख के अनुसार नागभट्ट प्रथम ने म्लेच्छ (अरबी) सेना को पराजित कर अपने साम्राज्य का विस्तार किया ।
- नागभट्ट प्रथम का समकालीन अरब शासक जुनैद था । इसकी पुष्टि अल बिलादुरी के विवरण से होती है ।
- हांसोट अभिलेखानुसार समकालीन अरब शासक जुनैद के नियंत्रण से भडौंच छीनकर नागभट्ट प्रथम ने चाहमान भतृवडढ द्वितीय को शासक नियुक्त किया ।

वत्सराज (783 ई. - 795 ई.)

- वत्सराज देवराज व भूयिका देवी का पुत्र था ।
- वत्सराज ने कन्नौज के त्रिपक्षीय संघर्ष की शुरुआत की, जो 150 वर्ष तक चला ।
- 150 वर्ष का त्रिपक्षीय संघर्ष कन्नौज को लेकर हुआ ।
- उत्तर भारत के गुर्जर प्रतिहार, दक्षिण भारत के राष्ट्रकूट वंश, पूर्व में बंगाल के पालवंश के बीच

गुहिल वंश के शासक

गुहिल | गुहिला दिव्य | गुहादिव्य

राजा गुहिल का जीवन परिचय :-

- विजयभूप ने अपनी राजधानी को अयोध्या से वल्लभीनगर में स्थानांतरित किया। विजयभूप की 6वीं पीढ़ी में शिलादित्य नामक व्यक्ति वल्लभीनगर का शासक बना । परमारों की राजकुमारी पुष्पावती के साथ शिलादित्य का विवाह हो जाता है । पुष्पावती के छः पुत्रियाँ होती हैं वह पुत्र प्राप्ति की मन्नत मांगने के लिए आबू के पास अबुर्दा देवी मंदिर चली जाती है । पीछे से वल्लभीनगर पर पड़ौसी राज्य ने आक्रमण कर दिया । इस आक्रमण में राजा शिलादित्य व बाकी परिवार के लोग मारे जाते हैं । रानी पुष्पावती अपनी सखियों व सेवक के साथ जंगल के रास्ते होते हुए वीरनगर नामक स्थान पर कमलाबाई नामक विधवा ब्राह्मणी के घर रहने लगीं । कुछ माह बाद पुष्पावती ने एक बच्चे को जन्म दिया जिसे वह कमलाबाई को सौंपकर स्वयं सती हो गई। ऐसा माना जाता है कि पुष्पावती ने बच्चे को गुफा में जन्म दिया था इसीलिए बच्चे का नाम गुहिल रखा दिया गया । बच्चे का पालन-पोषण ब्राह्मणी ने ही किया था।
- बड़ा होने पर उसे ब्राह्मणी द्वारा अपने वंश व अपने माँ-बाप के बारे में पता चला । गुहिल इसका प्रतिशोध लेने के उद्देश्य से वल्लभीनगर पहुँचा लेकिन उस समय मेवाड़ पर मेद जाति का शासन था । 566 ई. में गुहिल ने भीलों की मदद से मेदों को पराजित कर मेवाड़ पर अधिकार कर लिया।
- भगवान राम के पुत्र कुश का वंशज गुहिल ने 565 ई. में नागदा (उदयपुर) को अपनी राजधानी बनाकर स्वतंत्र राज्य की स्थापना की।

बप्पारावल / बापा रावल (734 ई. 810 ई.)

उपाधि- रावल (भीलों ने दी). हिन्दू – सूर्य , राजगुरु , चक्कवें कर्नल जेम्स टॉड के अनुसार गुहिल वंश के राजा नागादिव्य की हत्या के बाद उसकी पत्नी अपने पुत्र बप्पा को लेकर बड़ नगरा जाति की कमलावती के वंशजो के पास ले गई । बप्पा रावल हरित ऋषि की गायें चराता था । बप्पा पाशुपत संप्रदाय का अनुयायी था ।

- सिक्का – बप्पा रावल द्वारा जारी किए गए सिक्के पर कामधेनु (नंदी), बोप्पा शव्द, त्रिशुल अंकित हैं, जो उनकी शिव भक्ती को दर्शाता हैं ।
- 738 में बप्पा रावल ने अखी आक्रमण कारी जुनैद को हराया ।
- बप्पा रावल ने कई शादियां की जिनसे उन्हें 130 पुत्र प्राप्त हुए , जिन्हें "नौशेरापठान " कहा जाता है ।,
- तलवार का वजन लग भग -32 kg.
- उनके बारे में कहा जाता है कि वे 35 हाथ की धोती व 16 हाथ का दुपट्टा पहनते थे ।
  बप्पा रावल राजा गुहादिव्य के 8 वें वंशज थे ।

- बप्पा रावल (713-810) मेवाड़ राज्य में गुहिल राजपूत राजवंश के संस्थापक राजा बप्पारावल का जन्म 713 ई. में ईडर में हुआ। उनके पिता ईडर के शासक महेंद्र द्वितीय थे। बप्पा रावल गुहिल राजपूत राजवंश के वास्तविक संस्थापक थे (संस्थापक-गुहिलादित्य)। इसी राजवंश को सिसोदिया भी कहा जाता है, जिनमें आगे चलकर महान राजा राणा कुम्भा, राणा साँगा, महाराणा प्रताप हुए।
- बप्पा रावल जब मात्र 3 वर्ष के थे तब यह और इनकी माता असहाय महसूस कर रहे थे, तब भील समुदाय ने दोनों की मदद कर सुरक्षित रखा, बप्पा रावल का बचपन भील जनजाति के बीच रहकर बीता, बापा की विशेष प्रसिद्धि अरबों से सफल युद्ध करने के कारण हुई । सन् 712 ई. में मुहम्मद कासिम से सिंधु को जीता। बापा रावल के मुस्लिम देशों पर विजय की अनेक दंतकथाएँ अरबों की पराजय की इस सच्ची घटना से उत्पन्न हुई होगी।
- **आदि वराह मंदिर** - यह मंदिर बप्पा रावल ने एकलिंग जी के मंदिर के पीछे बनवाया 735 ई. में हज्जात ने राजपूताने पर अपनी फौज भेजी । बप्पा रावल ने हज्जात की फौज को हज्जात के मुल्क तक खदेड़ दिया। बप्पा रावल की तकरीबन 100 पत्नियाँ थीं, जिनमें से 33 मुस्लिम शासकों की बेटियाँ थीं, जिन्हें इन शासकों ने बप्पा रावल के भय से उन्हें ब्याह दी । 738 ई. बप्पा रावल, प्रतिहार शासक नागभट्ट प्रथम व चालुक्य शासक विक्रमादित्य द्वितीय की सम्मिलित सेना ने अल हकम बिन अलावा, तामीम बिन जैद अल उतबी व जुनैद बिन अब्दुल रहमान अल मुरी की सम्मिलित सेना को पराजित किया बप्पा रावल ने सिंधु के मुहम्मद बिन कासिम को पराजित किया बप्पा रावल ने गज़नी के शासक सलीम को पराजित किया । महाराणा कुंभा के समय में रचित एकलिंग महात्म्य

अध्याय – 3

प्रशासनिक व राजस्व व्यवस्था

मध्यकाल में राजस्थान की प्रशासनिक व्यवस्था से तात्पर्य मुगलों से संपर्क के बाद से लेकर 1818 ईस्वी में अंग्रेजों के साथ हुई संधियों की काल अवधि के अध्ययन से है । इस काल अवधि में राजस्थान में 22 छोटी बड़ी रियासतें थी और अजमेर मुग़ल सूबा था।

इन सभी रियासतों का अपना प्रशासनिक तंत्र था लेकिन, कुछ मौलिक विशेषताएं एकरूपता लिए हुए भी थी । रियासतें मुग़ल सूबे के अंतर्गत होने के कारण मुग़ल प्रभाव भी था ।

राजस्थान की मध्यकालीन प्रशासनिक व्यवस्था के मूलत : 3 आधार थे ।

- सामान्य एवं सैनिक प्रशासन ।
- न्याय प्रशासन ।
- भू-राजस्व प्रशासन ।

संपूर्ण शासन तंत्र राजा और सामन्त व्यवस्था पर आधारित था । राजस्थान की सामन्त व्यवस्था रक्त संबंध और कुलीय भावना पर आधारित थी । सर्वप्रथम कर्नल जेम्स टॉड ने यहाँ की सामन्त व्यवस्था को इंग्लैंड की फ्यूडल व्यवस्था के समान मानते हुए उल्लेख किया है।

कर्नल टॉड द्वारा उल्लेखित पश्चिम के फ्यूडल व्यवस्था के समान स्वामी (राजा) और सेवक (सामन्त) पर आधारित नहीं थी ।

केन्द्रीय शासन (Central Government)

राजा – सम्पूर्ण शक्ति का सर्वोच्च केंद्र

प्रधान – राजा के बाद प्रमुख । अलग-अलग रियासतों में अलग-अलग नाम – कोटा और बूँदी में दीवान, जैसलमेर, मारवाड़ मेवाड़ में प्रधान, जयपुर में मुसाहिब, बीकानेर में मुखत्यार कहते थे ।

भरतपुर में राजा के बाद प्रधान को मुखत्यार कहते थे ।

दीवान एवं बक्षी – अधिकांशत : जहाँ तीन प्रमुख थे वहाँ बक्षी होते थे । यह सेना विभाग का प्रमुख होता था । जोधपुर में फौज बक्षी भी होता था।

नायब बक्षी – सैनिकों व किलों पर होने वाले खर्च और सामन्तों की रेख का हिसाब रखता था ।

नोट – रेख = एक जागीरदार की जागीर की वार्षिक आय होती थी ।

शिकदार- मुग़ल प्रशासन के कोतवाल के समान होता था । यह गैर सैनिक कर्मचारियों के रोजगार सम्बंधी कार्य देखता था ।

सामन्ती श्रेणियां (Feudal System)

कर्नल टॉड ने सामन्ती व्यवस्था को इंग्लैंड में चलने वाली फ्यूडल व्यवस्था के समान माना है।

सामन्त श्रेणियां –

- **मारवाड़**- चार प्रकार की राजवी, सरदार, गनायत, मुत्सद्दी
- **मेवाड़** – तीन श्रेणियां, जिन्हें उमराव कहा जाता था । सलूम्बर के सामन्त का विशेष स्थान ।
- **जयपुर** – पृथ्वीसिंह के समय श्रेणी विभाजन। 12 पुत्रों के नाम से 12 स्थायी जागीरे चली जिन्हें कोटडी कहा जाता था।
- **कोटा**- में राजवी कहलाते थे।
- **बीकानेर** – में सामन्तों की तीन श्रेणियां थी।
- जैसलमेर में दो श्रेणियां थी।

अन्य श्रेणियां – भौमिया सामन्त, ग्रासिया सामन्त

सामन्त व्यवस्था (Feudal system)

राजस्थान में परम्परागत शासन में राजा -सामन्त का संबंध भाई-बंधु का था। मुग़ल काल में सामन्त व्यवस्था में परिवर्तन । अब स्थिति स्वामी – सेवक की स्थिति।

सेवाओं के साथ कर व्यवस्था –

परम्परागत शासन में सामन्त केवल सेवाएं देता था। लेकिन मुग़ल काल से कर व्यवस्था भी निर्धारित की गयी।

सामन्त अब

- **पट्टा रेख** – राजा द्वारा जागीर के पट्टे में उल्लेखित अनुमानित राजस्व।
- **भरत रेख** – राजा द्वारा सामन्त को प्रदत जागीर के पट्टे में उल्लेखित रेख के अनुसार राजस्व ।
- **उत्तराधिकार शुल्क** – जागीर के नये उत्तराधिकारी कर से वसूल किया जाने वाला कर । अलग-अलग रियासतों में इसके नाम -मारवाड़ – पहले पेशकशी फिर हुक्मनामा, मेवाड़ और जयपुर में नजराना, अन्य रियासतों मे कैद खालसा या तलवार बंधाई नाम था।, जैसलमेर एकमात्र रियासत जहाँ उत्तराधिकारी शुल्क नहीं लिया जाता था।
- **नजराना कर**- राजा के बड़े पुत्र के विवाह पर दिया जाने वाला कर ।
- न्योत कर
- तीर्थ यात्रा कर

अध्याय – 2

बावड़ी एवं हवेलियाँ

राजस्थान में बावड़ी *अथवा* ***बाव का तात्पर्य*** *एक विशेष प्रकार के जल स्थापत्य से हैं जिसमें एक गहरा कुआं अथवा एक बड़ा कुंड होता है इसमें पानी की सतह तक जानने के लिए सीढ़ियां बनी होती है इन पर अलंकृत द्वार सुंदर तोरण तथा देवी-देवताओं की प्रतिमाएं बनाई जाती है।*

देश में बावड़ीयों का प्रचलन राजस्थान में गुजरात में सबसे अधिक है तालाब का ही सुव्यवस्थित और सुसज्जित रूप कुंड या बावड़ी होता है।

अपराजिता में पृच्छा के अध्याय क्षेत्र में बावडियों के चार प्रकार बताए गए हैं -

नंदा- *इसमें एक दो द्वार तथा तीन कूट होते हैं बावड़िया मनोकामनाएं पूर्ण करती थी।*
भद्रा- *दो दीवारों एवं षट कूट वाली सुंदर बावड़ी*
जया- *देवता के लिए भी दुर्लभ बावड़ी जया में तीन द्वार व नो कूट होते थे।*
सर्वतोमुख- *मुख्य इसमें चार द्वार तथा बारह सुंदर कोट होते थे*

बावडियों के निर्माण में बंजारों का सर्वाधिक योगदान रहा है कालिदास मेघदूत में यक्ष द्वारा अपने घर के भीतर बावड़ी का वर्णन किया है। बावड़ी का मूल नाम है वापी जिसे अंग्रेजी में स्टेपवेल सीडीओ वाला कुआं भी कहते हैं। छोटी काशी बूंदी में सैकड़ों बावड़िया हैं, इसलिए बूंदी शहर को स्टेप वेल ऑफ सिटी के नाम से जाना जाता है।

राजस्थान की बावड़ियाँ -

बूंदी की प्रमुख बावड़ियाँ -

- *साबू नाथ की बावड़ी बूंदी में स्थित है।*
- *मेघनाथ की बावड़ी बूंदी में स्थित है।*
- *दमरा बावड़ी व्यास बावड़ी बूंदी में स्थित है।*
- *नाहर घुस की बावड़ी बूंदी में स्थित है।*
- *गुलाब बावड़ी बूंदी में स्थित है।*
- *गुल्ला/गुलाब बावड़ी बूंदी में स्थित है।*
- *मेघनाथ की बावड़ी बूंदी में स्थित है।*
- *दमरा बावड़ी/व्यास बावड़ी बूंदी में स्थित है।*
- *अनारकली की बावड़ी भावलदी बावड़ी बूंदी में स्थित है।*
- *श्याम बावड़ी बूंदी में स्थित है।*
- *नाथ की बावड़ी बूंदी में स्थित है।*
- *चेन राय की करीला की बावड़ी बूंदी में स्थित है।*
- *माननासी बावड़ी बूंदी में स्थित है।*
- *मनोहर बावड़ी डाकरा बावड़ी बूंदी में स्थित है।*
- ***चंपा बाग की बावड़ी बूंदी में स्थित है जो गर्मी में शीतल जल के लिए प्रसिद्ध है।***
- *गुल्ला गुलाब बावड़ी बूंदी में स्थित है इसे गुलाब बावड़ी कहा जाता है यह बावड़ी कुंडली आकार की होती है या दिन के तीसरे पहर में अपने आप ही पानी से भर जाती है।*
- *रानी जी की बावड़ी बूंदी में स्थित है रानी जी की बावड़ी रामराज अनिरुद्ध की रानी नाथवती द्वारा 1669 में निर्मित सबसे लंबी बावड़ी है। इसकी गणना एशिया की सर्वश्रेष्ठ बावड़ियों में होती है।*
- *धाबाई जी की बावड़ी नानकपुरिया बूंदी में स्थित है यह बावड़ी शत्रु शुक्ल की रानी की दासी अनारकली द्वारा बनाई गई है।*

जोधपुर की प्रमुख बावड़ियाँ -

- *मंडोर बावड़ी जोधपुर में स्थित है।*
- *गोरसंधा बावड़ी जोधपुर में स्थित है।*
- *व्यास बावड़ी जोधपुर में स्थित है।*
- *अनारा बावड़ी जोधपुर में स्थित है।*
- *नैनसी बावड़ी जोधपुर में स्थित है।*
- *धाय बावड़ी जोधपुर में स्थित है।*
- *हाथी बावड़ी जोधपुर में स्थित है।*
- *व्यास जी की बावड़ी जोधपुर में स्थित है।*
- *एक चटान बावड़ी मंडोर जोधपुर में स्थित है।*
- *तापी बावड़ी जोधपुर में स्थित है यह बावड़ी जोधपुर शहर की बावड़ी में सबसे लंबी बावड़ी है।*

झुंझुनूं की बावड़ियाँ -

- *तुलस्यानो की बावड़ी झुंझुनू में स्थित है।*
- *खेतानों की बावड़ी झुंझुनू में स्थित है।*
- *चेतणदास की बावड़ी झुंझुनू में स्थित है।*
- *मेड़तनी की बावड़ी झुंझुनू में स्थित है।*
- *मेडतनी की बावड़ी झुंझुनू में स्थित है इसका निर्माण झुंझुनू के अधिपति सरदूल सिंह झुंझुनू के मरणोपरांत उनकी तीसरी पत्नी बख्त कंवर ने अपने*

- बावड़ी में तीन ओर से सीढ़ियां बनी हुई है।
- इसके प्रत्येक खंड में 9 सीढ़ियां हैं। इसकी बनावट नौ चौकी बावड़ी के समान ही है।

काकी जी की बावड़ी

- यह बावड़ी जल स्थापत्य कला का अनूठा उदाहरण है। इसका निर्माण सरदार सिंह की पत्नी महारानी आली ने करवाया था।
- यह बावड़ी बूंदी के इंद्रगढ़ में स्थित है।

वीरू पूरी बावड़ी

- यह बावड़ी रानी वीरू और महात्मा पूरी जी के नाम को मिलाकर वीरपुरी बावड़ी कहलाई।
- वीरू रानी ने नाथ बाबा को जमीन दान दी थी, जिस पर इस बावड़ी का निर्माण किया गया। यह कलात्मक दृष्टि से महत्वपूर्ण है।
- यह बावड़ी उदयपुर में स्थित है।

एक चट्टान बावड़ी

- यह सातवीं सदी की सबसे बड़ी बावड़ी है जो जोधपुर मंडोर में स्थित है।
- मंडोर पर्वत माला में चट्टान को छोड़कर अंग्रेजी की L अक्षर के आकार में इस बावड़ी को बनाया गया।
- चट्टान को काटकर सीढ़ियां बनाई गई। चट्टान पर सप्तमातृकाओ और शिव की आकृतियां अंकित है।
- इसे प्राचीन नाम में " रावण की छतरी" नाम से पुकारा जाता है।

• राजस्थान की प्रमुख हवेलियाँ

जैसलमेर :

- **पटवों की हवेली** : विश्व की एकमात्र हवेली जिसकी खिड़कियाँ पत्थर की बनी हुई हैं जिसका निर्माण गुमानचन्द बाफना ने करवाया।
- **सालिम सिंह की हवेली** : 9 मंजिला हवेली जिसकी ऊपर की दो मंजिले लकड़ी की बनी हुई है।
- **नथमल की हवेली** को हाथी एवं लालू दोनों भाइयों के द्वारा बनाई गयी थी ।
- सर्वोत्तम विलास पैलेस

शेखावटी :

- **सोने-चाँदी की हवेली** : महनसर (झुंझुनू)
- **भगतों की हवेली** : नवलगढ़ (झुंझुनू)
- **रामनाथ गोयनका की हवेली** : मंडावा (झुंझुनू)
- **पंसारी की हवेली** : श्रीमाधोपुर (सीकर)
- **माल जी का कमरा** : चुरू
- **मन्त्रियों की हवेली** : चुरू
- **सुराणों की हवेली** : चुरू (चुरू का हवामहल)
- **खेतड़ी महल** : झुंझुनू (राजस्थान का दूसरा हवा महल)

नवलगढ़ :

- सर्वाधिक हवेलियाँ
- हवेलियों का नगर
- शेखावाटी की स्वर्ण नगरी

कोटा :

- गुलाब महल
- अबली मीठी का महल
- अमेड़ा महल
- जगमंदिर : दुर्जनसाल ने अपनी रानी ब्रज कंवर के लिए बनाया था ।

जोधपुर :

- बड़े मियां की हवेली
- राखी हवेली
- पोकरण हवेली
- एक खम्भा महल : महाराजा अजीत सिंह ने बनवाया था।
- राई का बाग पैलेस : 'जसवंत दे' (जसवंत सिंह प्रथम की रानी)
- उम्मेद पैलेस : छीत्तर पैलेस भी कहते हैं । इसका निर्माण अकाल राहत कार्यों के दौरान कराया गया था।
- यह एशिया का सबसे बड़ा आवासीय महल है।
- अजीत भवन पैलेस : राजस्थान का पहला हेरिटेज होटल
- पुष्य हवेली : विश्व की एकमात्र हवेली जो एक ही नक्षत्र पुष्य नक्षत्र में बनी।

डूंगरपुर :

- एक थंबिया महल
- जूना महल

अलवर:

- हवा बंगला : तिजारा
- विनय विलास पैलेस : सिटी पैलेस (अलवर)

टोंक :

- सुनहरी कोठी : इस्लामिक शैली में निर्मित

हार, हालरो, झालरो, खिंवली, गळपटियाँ, छैंड़ियो, तगतगई, तांतणियाँ, तैंड़ियो, थाळाँ, बठळ आदि ।

बाजू –
अणत, कड़ा, कातरिया, पट, तकमा, टड्डा, नवरत्न, अनन्त, बाजूबन्द, भुजबन्द, हारपन, अड़कणी, खांच, बहरखाँ आदि ।

कलाई –
कंगन, कंकण, कांकणी कंगन, गोखरू, चूड़ियां, हतपान (हथफूल), नोगरी, पुणच/पौंची, गजरो, छैंलकड़ो, पटला, पूंचिया आदि ।

अंगुलियां –
अंगूठी, अरसी, दामणा, बींटी, मुरसी, छल्ला आदि ।

अंगुठा –
अंगुथळो,

कमर –
कणकती, कन्दोरो, करधनी, तगड़ी, सटको, कड़तोड़ाँ, कणगावलि, मुखळा।

पैर –
आंवला, कड़ला, घुंघरू, झांझर, टणका, हनका, तोड़ी, लच्छा, लंगर, पायल (कंकणा / पींजणी / पेजणिया / रमझोळ / शकुन्तला), पायजेब, नेवटी, नूपूर, नंकुम, हीरानामी, अणोटपोल, तेधड़, पादसंकळिका, रोळ, टोडराँ।

विशेष-पुरूषों के पांव में स्वर्णाभूषण टोडर पहना जाता हैं।

पैर की अंगुली –बिछिया, पगपान, गौर, फोलरी, लछने, गूठलो, दौळीकियाँ, नखलियाँ, गुठलो आदि ।

राजस्थान में पुरूषों के आभूषण

सिर –
कलंगी, सिरपेच, सेहरा, मुकुट।

कान –
मुरकी, ओगनिया, झेला, लूंग।

गला –
कंठा, चैंकी, फूल।

हाथ –
कड़ा, मूरत, ठाला, ताती, माठीं

अध्याय – 10

राजस्थान की चित्रकलाएँ एवं हस्तशिल्प

राजस्थानी चित्रकला की शैलियों का वर्गीकरण

राजस्थानी चित्रशैली का सबसे पहला वैज्ञानिक विभाजन 1916 ई. में श्री आनंद कुमार स्वामी ने अपनी पुस्तक 'राजपूत पेंटिग्स में किया। राजस्थानी चित्रकला की शैलियों को भौगोलिक, सांस्कृतिक आधार पर चार प्रमुख स्कूलों में वर्गीकृत किया जा सकता है।

मेवाड़ शैली

राजस्थानी चित्रकला का प्रारंभ जैन, अपभ्रंश, मालव आदि कलाओं के सामंजस्य से माना जाता है। राजस्थानी चित्रशैली की मूल शैली मेवाड़ चित्रशैली को माना जाता है। मेवाड़ स्कूल में चित्रकला को विकसित करने का श्रेय 'महाराणा कुंभा' को जाता है। मेवाड़ चित्र शैली का प्रथम चित्रित ग्रंथ 1260 ई. का 'श्रावक-प्रतिक्रमण सूत्र चूर्णि' को माना जाता है द्वितीय चित्रित ग्रंथ' सुपासनाहचरित' है जिसमें स्वर्ण चूर्ण का प्रयोग किया गया। राजस्थानी चित्रकला के मेवाड़ स्कूल को विद्वानों द्वारा चार शैलियों में विभाजित किया गया है-

उदयपुर (मेवाड़) उपशैली

1. जगत सिंह प्रथम के शासन काल को मेवाड़ चित्रकल काल स्वर्ण काल कहा जाता हैं ।
2. प्रमुख चित्रित ग्रंथ महाराणा तेजसिंह के काल में रचित 'श्रावक प्रतिक्रमण सूत्र चूर्णि एवं सुपासनाहचरित', गीत गोविंद आख्यायिका, 'रामायण शूकर' आदि है ।
3. प्रमुख चित्रकार साहिबदीन, मनोहर, कृपाराम, उमरा, गंगाराम, भैरोराम, शिवदत्त आदि ।
4. इस शैली में पीला एवं लाल रंगों प्रमुख प्रयोग किया गया है ।
5. इस शैली में प्रकुख आकृति व वेशभूषा गठीला शरीर, लम्बी मूंछे, छोटा कद, विशालनयन, सिर पर पगड़ी, कमर में पटका, लंबा घेरदार जामा, कानों में मोती आदि दर्शाया गया हैं ।
6. इस शैली में नारी आकृति व वेशभूषा के चित्र मीनाकृत आँखे, गरूड़ सी लंबी नाक, ठिगना कद, लम्बी वेणी, लहंगा एवं पारदर्शक ओढ़नी से बनाये जाते थे।

7. विशेष तथ्य

- महाराणा अमरसिंह प्रथम के समय में मेवाड़ शैली पर मुगल प्रभाव लगा।
- मेवाड़ शैली पर गुर्जर व जैन शैली का सर्वाधिक प्रभाव है।
- मेवाड़ चित्रशैली में बादल युक्त नीला आकाश, कदंब के वृक्ष, हाथी, कोयल, सारस एवं मछलियों का चित्रण अधिक मिलता है।
- महाराणा जगतसिंह प्रथम ने राजमहल में 'चितेरो की ओवरी' नाम से कला विद्यालय स्थापित करवाया जिसे 'तस्वीरां रो कारखानों के नाम से जाना जाता है।

नाथद्वारा उपशैली

1. नाथद्वारा शैली के प्रमुख शासक महाराणा राजसिंह थे।
2. इस शैली के प्रमुख चित्रित ग्रंथ कृष्ण लीला, श्रीनाथ जी के विग्रह, ग्वाल-बाल, गोपियों आदि के चित्र प्रमुखतः मिलते हैं ।
3. इस शैली के प्रमुख चित्रकार नारायण, चतुर्भुज, घासीराम, उदयराम, रेवा शंकर एवं कमला तथा इलायची (महिला चित्रकार)।
4. इस शैली में हरा एवं पीलें रंगों का प्रमुख प्रयोग किया गया है ।
5. इस शैली में पुरुष आकृति व वेशभूषा पुरुषों में पुष्ट कलेवर, नंद एवं बालगोपालों को भावपूर्ण चित्रण हुआ करता था।
6. इस शैली में नारी आकृति व वेशभूषा छोटा कद, तिरछी एवं चकोर के समान आँखे, शारीरिक स्थूलता एवं भावों में वात्सल्य की झलक बनाई जाती थी।

विशेष तथ्य-

- इस चित्र शैली में पिछवाई एवं भित्ती चित्रण प्रमख है।।
- इस चित्र शैली में गाय, केले के वृक्षों को प्रधानता दी गई है।

देवगढ़ उपशैली

1. इस शैली का प्रमुख विषय शिकार के दृश्य, राजसी ठाट-बाट, श्रृंगार, प्राकृतिक दृश्य को दर्शाना था ।
2. इस शैली के प्रमुख चित्रकार कँवला, चोखा, बैजनाथ थे।
3. इस शैली में पीले रंग का प्रमुख प्रयोग किया गया हैं ।

4. विशेष तथ्य-

- यह शैली मारवाड़, जयपुर व मेवाड़ की समन्वित शैली है।
- इस शैली को सर्वप्रथम डॉ. श्रीधर अंधारे ने प्रकाशित किया।
- महाराणा जयसिंह के समय रावत द्वारिका दास चूंडावत ने देवगढ़ ठिकानें (राजसमंद) को 1680 ई. में स्थापित किया तदुपरान्त देवगढ़ शैली का जन्म हुआ।

चावण्ड उपशैली

1. 1585 ई. में जब प्रताप ने चावंड को अपनी राजधानी बनाई तब से इसका विकास शुरू हो गया था ।
2. अमर सिंह का काल मेवाड़ की चावंड शैली का स्वर्ण काल कहलाता है ।
3. अमर सिंह प्रथम के समय इस शैली के प्रमुख चित्रकार नसीरदी (निसारदी) ने राग माला का चित्रण किया ।

मारवाड़ शैली

राजस्थान चित्रशाला के मारवाड़ स्कूल को निम्नलिखित चित्र उपशैलियों में विभाजित किया गया है ।

जोधपुर उपशैली

1. जोधपुर शैली के प्रमुख शासक महाराजा जसवंत सिंह एवं महाराजा मानसिंह थे।
2. इस शैली के प्रमुख चित्रित ग्रंथ 'सूरसागर' व 'रसिकप्रिया' पर आधारित 'दुर्गा सप्तरानी।
3. इस शैली के प्रमुख चित्रकार नारायणदास, अमरदास, बिशनदास, शिवदास, रतन जी भाटी थे।
4. इस शैली में पीलें रंग का उपयोग किया गया है।
5. इस शैली में पुरुष की आकृति धनुष के समान बड़ी आँखे, घनी दाढ़ी-मूछे, लंबा व गठीला बदन, मोटी गर्दन, ऊँची पगड़ी, तुर्रा कलंगी, मोती की माला, ऊँट व घोड़े पर सवार पुरुष बताया गया है।
6. इस शैली में नारी की आकृति गठीला बदन काले-लम्बे बाल, बादाम जैसी आँखे, पतली लंबी अंगुलियाँ, पतली कमर, कान तक भौंहे आदि।

विशेष तथ्य

- यह शैली स्वतंत्र रूप से 'राव मालदेव' के समय विकसित हुई।

नोट – प्रिय उम्मीदवारों, यहाँ हमने केवल SAMPLE ही दिया है, पूरा टॉपिक नही दिया है / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए नीचे दिए गये हमारे संपर्क नंबर पर कॉल कीजिए या लिंक पर क्लिक करें / दोस्तों, हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी "राजस्थान 3rd Grade Level – 2 (REET मुख्य परीक्षा)" में पूर्ण संभव मदद करेंगे और आप "INFUSION NOTES" के साथ इस परीक्षा में जरूर सफल होंगे, धन्यवाद /

संपर्क करें – 8233195718, 8504091672, 9694804063, 9887809083,

प्रिय दोस्तों, अब तक हमारे नोट्स में से अन्य परीक्षाओं में आये हुए प्रश्नों के परिणाम –

EXAM (परीक्षा)	DATE	हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्न
RAS PRE. 2021	27 अक्तूबर	74 प्रश्न आये
REET (लेवल -I, 2)	2021	98 (150 में से)
SSC GD 2021	16 नवम्बर	68 (100 में से)
SSC GD 2021	30 नवम्बर	66 (100 में से)
SSC GD 2021	01 दिसम्बर	65 (100 में से)
SSC GD 2021	08 दिसम्बर	67 (100 में से)
राजस्थान S.I. 2021	13 सितम्बर	113 (200 में से)
राजस्थान S.I. 2021	14 सितम्बर	119 (200 में से)

राजस्थान S.I. 2021	15 सितम्बर	126 (200 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (1st शिफ्ट)	79 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	103 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (1st शिफ्ट)	95 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	91 (150 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (1st शिफ्ट)	59 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	61 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (1st शिफ्ट)	56 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	57 (100 में से)
U.P. SI 2021	14 नवम्बर 2021 1st शिफ्ट	91 (160 में से)
U.P. SI 2021	21नवम्बर2021 (1st शिफ्ट)	89 (160 में से)

& Many More Exams like REET, UPSC, SSC Etc.

दोस्तों, इनका proof देखने के लिए नीचे दी गयी लिंक पर क्लिक करें या हमारे youtube चैनल पर देखें –

RAS PRE. – https://www.youtube.com/watch?v=p3_i-3qfDy8&t=136s

VDO PRE. – https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk856W18&t=202s

Patwari – https://www.youtube.com/watch?v=X6mKGdtXyu4&t=103s

अन्य परीक्षाओं में भी इसी तरह प्रश्न आये हैं Proof देखने के लिए हमारे youtube चैनल (Infusion Notes) पर इसकी वीडियो देखें या हमारे नंबरों पर कॉल करें।

संपर्क करें- 9887809083, 8233195718, 9694804063, 8504091672

ONLINE ORDER के लिए OFFICIAL WEBSITE	Website- https://bit.ly/3rd-grade-mains-notes
PHONE NUMBER	+918504091672 9887809083 +918233195718 9694804063
TELEGRAM CHANNEL	https://t.me/infusion_notes
FACEBOOK PAGE	https://www.facebook.com/infusion.notes
WHATSAPP करें	https://wa.link/hx3rcz

FREE SAMPLE